DRINK
GE F R
कैम्पा का
अरेंज स्वाद.... पीजिए,
मज़ा ऐसा कि याद कीजिए
कैम्पा से ज़िंदगी में मौजबहार. इसमें अब आरेंज*स्वाद की हलचल जगाइए, कैम्पा पीजिए, पिलाइए. मौजमस्ती का रंग, मौजमस्ती का स्वाद—कैम्पा आरेंज*स्वाद. ज़िंदगी की प्यास अधूरी, कैम्पा आरेंज*स्वाद से कीजिए पूरी—इन सभी रंगारंग प्यासे लोगों की तरह...अभी.
*आर्टिफिशल फ्लेवर
Campa
Campa
Campa
कैम्पा
अरेंज* स्वाद
OBM 3063 HN

Results of Chandamama—Camlin Colouring Contest No. 13 (Hindi)

1st Prize: Miss Rosy, Ghazibad. *2nd Prize:* Archi Banerjee, Vasco-da-Gama. *3rd Prize:* K. Ashokkumari, Baroda-4. *Consolation Prizes:* Somesh Upreti, Jonhati. Sangeeta Behki, New Delhi. Ashok Kumar, New Delhi-24. Anita Malla, Jand K Tawi. Kalpana Khangan, Bilaspur.

दुश्मन का नाश!

दंत-भक्षक दुश्मन
(COOH*)
दंत-प्रदेश के नाश के लिए
विद्रोही सेना का दल
प्रशिक्षित कर रहा है.
CANE
SUGAR

सेनापति को
समाचार
मिलता है.
हमें तुरन्त बिनाका-एफ़
को बुलाना चाहिए. दंत-भक्षक
जानता है कि हमारे
पास लड़ाई के हथियारों
की कमी है.

बिनाका-एफ़ चुनौती स्वीकार करता है.
हम बिनाका फ्लोराइड
टूथपेस्ट और बिनाका टूथब्रश से नीच
दंत-भक्षक को कड़ा जवाब देंगे.
BF

दंत-प्रदेश की नियमित सेना
दिन-रात लड़ाई की तैयारी
में जुट गयी.

सोमवार,
दिसम्बर प., कक्ष 9.
रात के अंधेरे में
दंत-भक्षक आक्रमण
कर देता है.
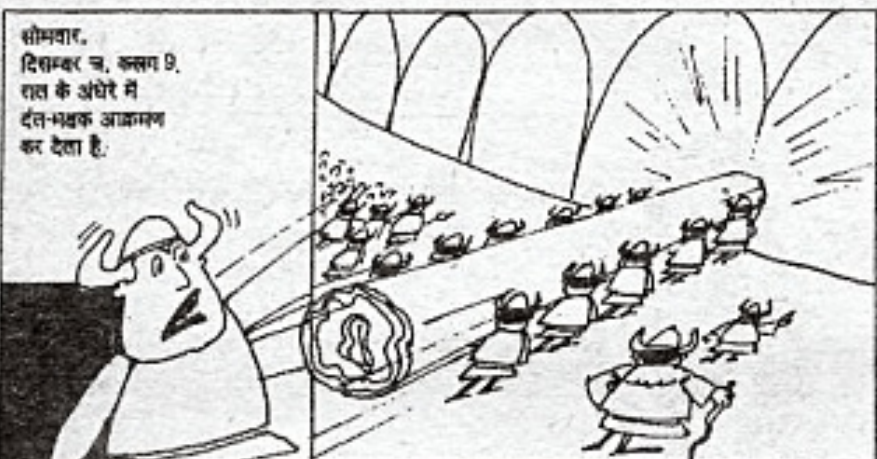
लेकिन बिनाका-एफ़ और दंत-प्रदेश के
सिपाही उसका मुंह तोड़ जवाब देते हैं.

भागो! हम मारे गए!
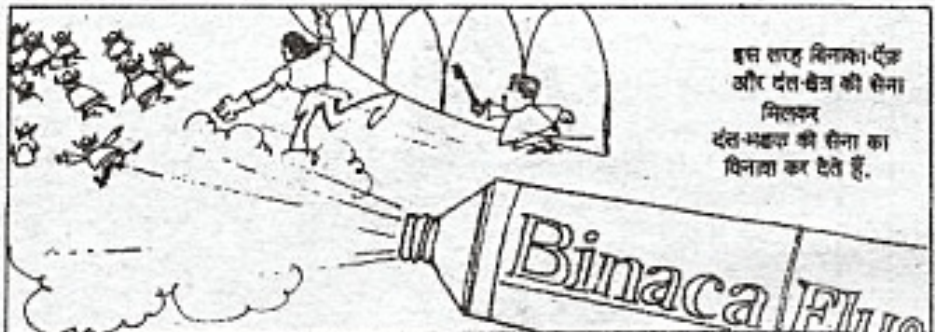
इस तरह बिनाका-एफ़
और दंत-क्षेत्र की सेना
मिलकर
दंत-भक्षक की सेना का
विनाश कर देते हैं.
Binaca Fluo

दंत-क्षेत्र की सेना की
महान विजय!
BF
* कार्बोक्सिलिक एसिड ग्रुप का फार्मूला,
जो दांतों के एनेमल को नष्ट करके,
दांतों में दर्दनाक खोखले बनाता है
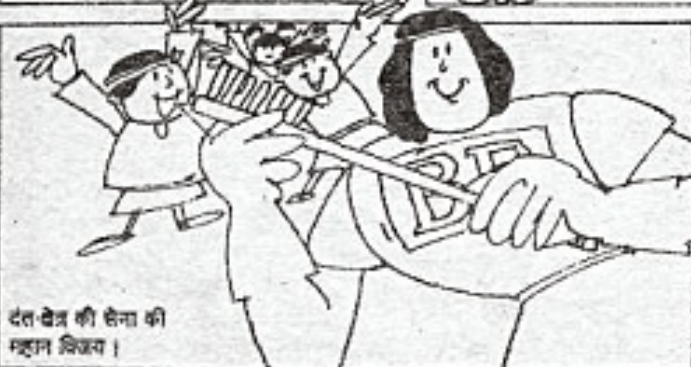
यह सारा कमाल बेहतर हथियारों और
प्रशिक्षण का था. यानी बिनाका फ्लोराइड और
बिनाका टूथब्रश का.
BF
Binaca Fluoride
अधिक मजबूत दांत,
दंत-क्षय की रोकथाम — बिनाका फ्लोराइड.

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

इस अंक के साथ "धूमकेतु" रंगीन सचित्र धारावाही स्वर्गीय चित्रा के चित्रों के साथ प्रारंभ किया जा रहा है। आज के हमारे अधिकांश पाठकों के लिए यह रचना नई है; लेकिन पुराने पाठकों ने भी फिर से इसे पढ़ने की उत्सुकता प्रकट करते हुए अनेक पत्र लिखे हैं। आशा ही नहीं, बल्कि हमारा पूर्ण विश्वास है कि यह धारावाही पाठकों का मनोरंजन करने में सफल सिद्ध होगा।

अमर वाणी

हिरण्य, धान्य, रत्नानि, यानानि, विविधानि च
तथान्य दपि यत्किंचित् प्रजाभ्यस्यान्महीपते: ।।

[राजाओं के लिए सोना, धान्य, रत्न, तरह-तरह के वाहन तथा अन्य प्रकार की सभी चीजें जनता से ही प्राप्त होनी हैं।]

वर्ष : ३२ जून १९८० अंक : १०

एक प्रति : १-५० : : वार्षिक चन्दा : १८-००
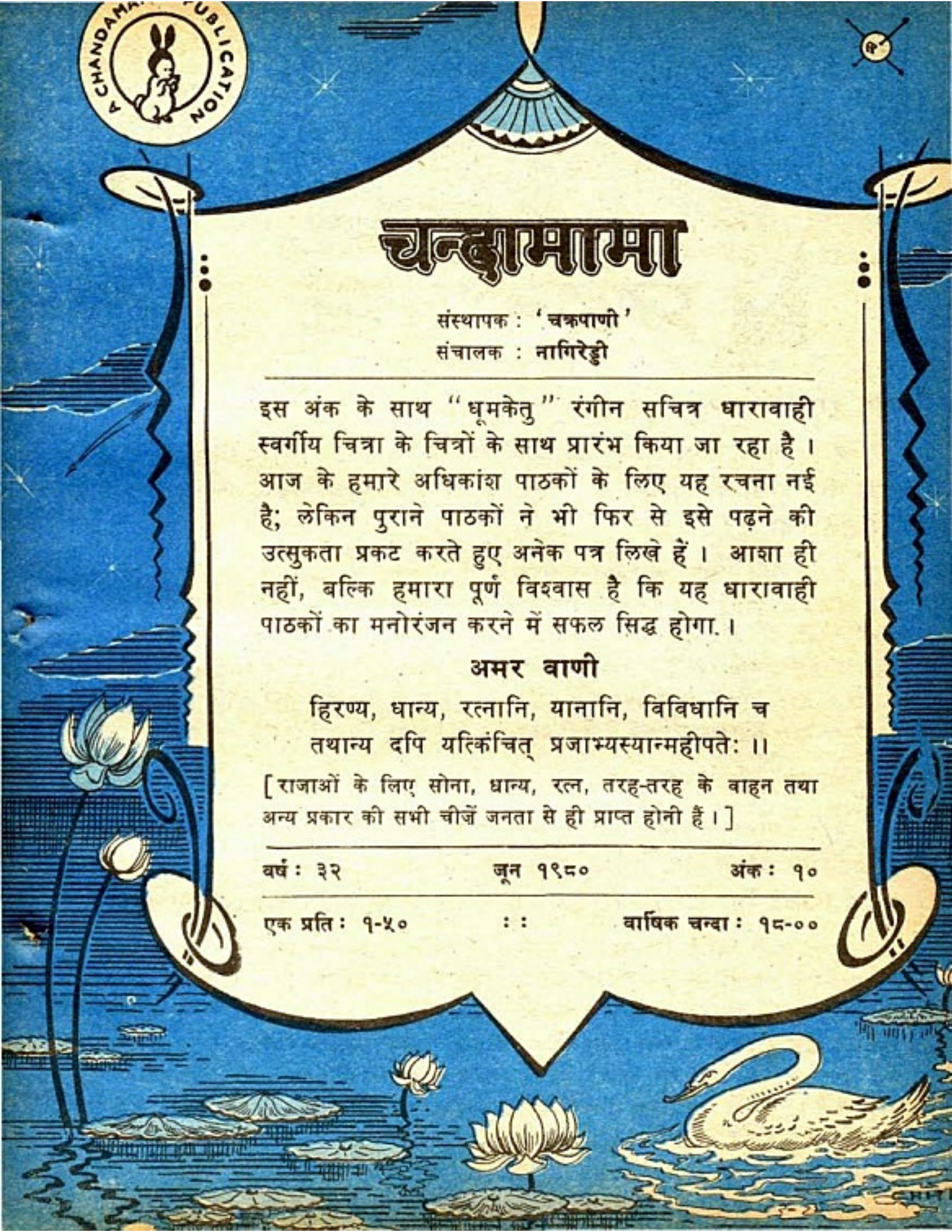
गेदेल हरिशंकर नायुडु, रायगढ़

प्र.: पृथ्वी तथा पृथ्वी पर रहनेवाली प्रत्येक वस्तु में चुंबक शक्ति है, इसलिए सारी चीज़ें पृथ्वी से लगी हुई हैं। इसी प्रकार सूर्य द्वारा आकृष्ट ग्रह सूर्य से क्यों लगे हुए नहीं हैं?

उ.: इसमें 'गति' की समस्या जुड़ी हुई है। राकेट के प्रयोगों के द्वारा अमित गति को प्राप्त होनेवाले कृत्रिम उप ग्रहों को पृथ्वी की चुंबक शक्ति पृथ्वी के चारों तरफ़ घुमा सकती है, लेकिन पृथ्वी की ओर खींच नहीं सकती। चन्द्रमा अपनी गति के द्वारा ही पृथ्वी पर गिरे बिना पृथ्वी के चतुर्दिक घूम रहा है। इतना क्यों? गेंद के खेल में लात खाकर गेंद पृथ्वी की चुंबक शक्ति के विरुद्ध ऊपर जाकर अपनी गति के कम होने तक पृथ्वी की ओर नीचे नहीं आती, इसी प्रकार ग्रह अपनी तेज गति के कारण ही सूर्य में न गिरकर सूर्य के चतुर्दिक निश्चित परिधि में घूम रहे हैं।

वी. के. यम. लक्ष्मणराव, कोर्बा

प्र.: पानी का कोई रंग नहीं है, लेकिन पानी पर जब रोशनी गिरती है, तब परावर्तन या शोषण होना चाहिए, ऐसा होने पर पानी सफ़ेद, काला या किसी अन्य वर्ण में दिखाई देना चाहिए, पर ऐसा नहीं होता, इसका कारण क्या है?

उ.: सभी रंगों से पूर्ण सूर्य की रोशनी को परावर्तन करनेवाली चीज़ें काली दिखाई देती हैं। लेकिन रोशनी को पूर्ण रूप से परावर्तन करनेवाली चीजें सफ़ेद दीखती हैं। पर सूर्य के प्रकाश के कतिपय रंगों को सोखनेवाली चीज़ें न सोखे जानेवाले रंगों में (उदा.: पत्ते हरे रंग में, फूल विभिन्न रंगों में) दिखाई देते हैं। पानी किसी भी रंग को नहीं सोखता, इसलिए पानी से होकर प्रकाश जब फैल जाता है, तब सभी रंग दिखाई देते हैं। प्रकाश को परावर्तन करनेवाली शक्ति कुछ हद तक पानी में है। रात के वक्त नहरों में सभी प्रकार के रंगों को प्रतिबिंबित होते हम देख सकते हैं। पानी के स्वतः रंग के न होने का यही कारण है।

[८३]

मगध देश में चंपकवती नामक जंगल में एक कौए और हिरण के बीच कई दिनों से गहरी दोस्ती थी। हिरण खूब हृष्ट-पुष्ट था। उसे देख सियार ने अपने मन में सोचा–"इसका मांस बड़ा ही स्वादिष्ट होगा, पर कैसे प्राप्त कर सकता हूँ? इस के लिए एक ही उपाय है। उसके मन में मेरे प्रति विश्वास पैदा करना है।" यों सोचकर वह हिरण के पास पहुँचा और पूछा–"दोस्त, खैरियत से हो न?"

हिरण ने पूछा–"तुम कौन हो?"

"मैं क्षुद्र बुद्धि नामक सियार हूँ। मैं अपने निकट के सभी लोगों को खोकर यहाँ पर अकेला ज़िंदगी काटता हूँ। अब तो हम दोस्त बन गये हैं, मैं हमेशा के लिए तुम्हारे साथ रहना चाहता हूँ।" सियार ने जवाब दिया। हिरण ने मान लिया।

शाम तक वे दोनों जंगल में घूमते रहे, अंधेरे के फैलते ही दोनों हिरण के घर पहुँचे। हिरण के साथ बहुत समय से दोस्ती रखनेवाले सुबुद्धि नामक कौआ चंपक वृक्ष की एक डाल पर बैठा था, उसने हिरण को अपने साथ एक सियार को लाते देख पूछा–"दोस्त, यह कौन है?"

"यह सियार हमारे साथ दोस्ती करना चाहता है।" हिरण ने जवाब दिया।

इस पर कौआ बोला–"दोस्त, अपरिचितों के साथ आकस्मिक दोस्ती अच्छी नहीं होती। किसी को कुल, गोत्र व स्वभाव को जाने बिना आश्रय देना नहीं चाहिए। एक बिल्ली की भूल से जरद्गव नामक गीध अपने प्राण ही खो बैठा था।"

"सो कैसे हुआ?" हिरण ने कौए से पूछा। कौए ने यों उत्तर दिया:

उस वक़्त गीध को आते देख दीर्घकर्ण ने सोचा—"उफ़! अब मेरा काम तमाम हो गया है; फिर भी जब खतरा सिर पर आ ही गया तो उस खतरे से बचने का उपाय सोचना चाहिए। गीध ने मुझे देख ही लिया है, अब भागने से कोई प्रयोजन नहीं है। चाहे जो हो, मैं पहले इसे विश्वास दिलाऊँगी, तब उसके समीप जाऊँगी।"

इसके बाद वह गीध के समीप जाकर बोली—"महाशय, मेरे प्रणाम ग्रहण कीजिये।"

"तुम कौन हो?" गीध ने पूछा।

"मैं बिल्ली हूँ।" दीर्घकर्ण ने कहा।

"तुम यहाँ से चले जाओ, वरना मैं तुम्हारे प्राण ले लूँगा।" गीध ने कहा।

"आप कृपया मेरी बात पर थोड़ा ध्यान दीजिए, इसके बाद भी मुझे मारना चाहेंगे तो ऐसा ही कीजिए। क्या किसी कुल या जाति से संबंधित होने मात्र से ही किसी का आदर करना या मारना उचित होगा? हम तो साधारणतया किसी के चाल-चलन से परिचित होने के बाद ही तो उसका सम्मान करते हैं या उसे मार डालते हैं।" बिल्ली ने समझाया।

"यहाँ क्यों आई हो?" गीध ने पूछा।

"मैं इस पवित्र गंगा के किनारे निवास करती हूँ। प्रति दिन गंगा में नहाते

जरद्गव और दीर्घकर्ण

गंगा के किनारे गृध्रकूट नामक एक पहाड़ था। उस पर बड़े वृक्ष के खोखले में जरद्गव नामक एक गीध निवास करता था। बदक़िस्मती से उसकी आँखें व नाखून जाते रहें। उस पेड़ पर निवास करनेवाले पक्षी गीध पर रहम खाकर अपने आहार में से थोड़ा अंश दिया करते थे। इसके बदले में वह बड़े पक्षियों के बच्चों की देखभाल किया करता था।

एक बार जब बड़े पक्षी सब बाहर गये, तब उनके बच्चों को खाने के वास्ते दीर्घकर्ण नामक एक बिल्ली आ पहुँची। उसे देख बच्चे डर के मारे चिल्लाने लगे।

ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए चांद्रायण व्रत कर रही हूँ। मैंने कुछ पक्षियों के मुँह से विश्वस्त रूप से सुना है कि आप स्मृतियों का अध्ययन करते हैं। इसलिए आप जैसे वयोवृद्ध एवं ज्ञानवृद्ध के द्वारा धर्म के रहस्य जानने की कामना से आई हूँ। लेकिन जब अतिथि के रूप में आये हुए मुझे देख आपने मार डालने की धमकी दी, इस पर मैंने सोचा कि आप धर्म के तत्व पूर्ण रूप से नहीं जानते, क्योंकि धर्मशास्त्र बताते हैं कि अपने घर अतिथि के रूप में आये हुए शत्रु का भी उचित रूप में आतिथ्य देना चाहिए। जिस पेड़ पर पत्थर फेंकने के लिए लोग आते हैं, उन्हें भी वह छाया देता है। भगाया गया अतिथि भगानेवाले गृष्हस्थ के सारे पुण्य को ले जाता है। निम्न जाति का व्यक्ति भी अगर अग्र वर्ण के घर जाता है तो उसका आदर करना चाहिए, क्योंकि अतिथि समस्त देवताओं के लिए प्रतिनिधि होता है।" बिल्ली ने समझाया।

इसके उत्तर में गीध ने कहा–"बिल्लियाँ बिना परवाले पक्षियों को खाना ज्यादा पसंद करती हैं। यहाँ पर तो बिना परवाले कई छोटे-से पक्षी हैं; इसलिए मैंने ऐसा कहा था।"

बिल्ली अपने हाथों से पृथ्वी का स्पर्श करके कानों को छूकर बोली–"मैंने स्मृतियों का अध्ययन किया है; मनो विकारों को त्याग दिया है, चान्द्रायण व्रत

कर रही हूँ। यह भी जानती हूँ कि अनेक विषयों में धर्मशास्त्रों के अन्दर परस्पर मतभेद होने पर भी सभी एक मत से इस तथ्य को स्वीकार करते है कि अहिंसा परम धर्म है। इस संबंध में और कोई कारण नहीं है; दूसरों की किसी प्रकार से हानि न करके जो अपनी हानि करते हैं, उनको क्षमा करता है, वह व्यक्ति सीधे स्वर्ग में जाता है, मृत्यु के बाद हमारे द्वारा संपादित पुण्य ही हमारा साथ देता है। बाकी सब देह के साथ नष्ट हो जाता है। खानेवाले के लिए तात्कालिक रूप से उसकी जिह्वा की चपलता ही तृप्त हो जाती है, मगर खाया जानेवाला व्यक्ति अपने प्राण ही खो बैठता है। जब मृत्यु सामने आ जाती है, तब मनुष्य जो व्यथा पाता है, वह वर्णन के बाहर की बात है। जंगल में अपने आप उगनेवाले पत्ते व वनस्पति खाकर जिस कमबख्त पेट को भरा जा सकता है, उसके वास्ते कोई भी दूसरों के प्राण लेकर कहीं पाप मोल लेता है?"

गीध बिल्ली के मुंह से ये बातें सुन धोखा खा गया, अन्य पक्षियों को सूचित किये बिना ही उसने बिल्ली को पेड़ के खोखले में रहने दिया।

गीध को अपनी मीठी बातों से धोखा देकर उसके वृक्ष के खोखले में घुसनेवाली बिल्ली रोज किसी एक पक्षी के बच्चे को पकड़कर अपने खोखले में ले आती और वहाँ उसे खा डालती थी।

यों थोड़े दिन बीत गये। अपने बच्चों से वंचित पक्षियों ने हत्यारे का पता लगाने के लिए बैठक बुलाई। बिल्ली को जब मालूम हुआ कि पक्षी उसकी खोज में हैं, तब वह उस खोखले को छोड़ चुपके से भाग गई।

पक्षियों ने सारे प्रदेश की तलाशी ली। आखिर पेड़ के खोखले में हड्डियों को देख सब ने यह निश्चय किया कि गीध ने ही उनके बच्चों को खा डाला है, तब सब ने उसे नोच-नोचकर मार डाला।

प्राचीनकाल में कुंडलिनी द्वीप पर राजा चित्रसेन शासन करते थे। राज्य-भार ग्रहण करने के दो वर्ष के भीतर उन्होंने जनता के कल्याण के हेतु कई योजनाएँ अमल कीं। उनके मन में यह तीव्र इच्छा थी कि उनकी प्रजा समस्त प्रकार के सुखों का अनुभव करे और उनका राज्य राम राज्य कहलवाये! इस कारण राजा चित्रसेन ने जनता पर लगाये गये करों में से आधे कर घटा दिये!

राजा की इस उदारता पर प्रजा बहुत खुश हुई। कर का भार कम हो जाने से प्रजा को सुखकर प्रतीत हुआ। राज्य भर में सर्वत्र राजा चित्रसेन की उदारता की प्रशंसा में कहानियाँ कही व सुनी जाती थीं। नगर और गांवों में भी उनके यश के गीत गाये जाते थे।

उदार स्वभाववाले राजा का यश देश के चारों तरफ़ फैल जाना ख़ुशी की बात तो थी, लेकिन साथ ही उधर ख़जाना भी खाली होता गया। लगातार ख़र्च किया जाता रहे तो धन कहाँ तक ठहर सकता है? धन के अभाव में शासन-व्यवस्था में भी डँवाडोल होने लगी।

राजा चित्रसेन का प्रधान मंत्री बड़ा मेधावी था। उसने राजा के संकल्प को पहले ही भांप लिया था, इसलिए इसके द्वारा होनेवाले परिणामों से भी वे परिचित थे। इसीलिए जब भी मौक़ा मिलता, वह राजा को सावधान करता रहा, लेकिन

कोई मूल्य नहीं, तब मैं मंत्री का यह पद कैसे संभाल सकता हूँ? इसलिए आप से मेरा निवेदन है कि आप मुझे इस जिम्मेदारी से मुक्त कर दीजिएगा।"

"क्या राज्य की आर्थिक स्थिति ऐसी विषम हो गई है?" राजा ने पूछा।

"महाराज, मैं आप से क्या निवेदन करूँ? उधर सैनिकों तथा राजकर्मचारियों को तनख्वाहें देनी हैं। अब सिर्फ़ एक हफ़्ते की मोहलत है। इस वक़्त ख़जाने में जो धन है, उससे हम मालियों के भत्ते तक चुका नहीं पायेंगे।" मंत्री ने समझाया।

राजा चित्रसेन थोड़ी देर तक सोचते रहें, तब बोले—"महामंत्री, कल दरबार बुलवा लीजिए! राजकर्मचारियों के साथ राज्य के सभी प्रमुख व्यक्तियों को उपस्थित कराइये।"

"जी हां, महाराज! ऐसा ही करूँगा।" मंत्री ने कहा, पर उसकी समझ में न आया कि राजा के द्वारा दरबार बुलवाने का मतलब ही क्या है?

इसके बाद सारे राज्य में ढिंढोरा पिटवाया गया, जनता ने सुना, पर उनकी भी समझ में न आया कि दरबार क्यों बुलवाया जा रहा है? इसलिए सब कोई अपने अपने ढंग से सोचने लगे। पर सभी लोग यह जानते थे कि राजा तो

राजा तो यह मानते थे कि अपने जीवन काल में अपनी प्रजा के लिए कोई शाश्वत हित का काम करके जाना चाहिए। इस कारण मंत्री के सुझाव उसके दिमाग में नहीं घुसे।

आखिर खजाने के एकदम खाली होने की नौबत आ गई। मंत्री ने सोचा कि अब उपेक्षा करने से खतरा पैदा होगा, एक दिन दुस्साहस करके राजा को सूचित किया—"महाराज, आप का कानून जनता के लिए बड़ा ही सुखप्रद है, मगर हमारा खजाना बिलकुल खाली होता जा रहा है। धन के अभाव में कोई कार्य चल नहीं सकता है न! जब मेरी बात का

एकदम दयालू हैं। इसलिए कुछ लोगों ने यह अफ़वाह फैला दी कि 'राजा पूर्ण रूप से कर उठवा देंगे।'

दूसरे दिन दरबार बुलाया गया। उसमें राज्य के सलाहकार, प्रमुख अधिकारी और प्रतिष्ठित नागरिक उपस्थित थे। राजा चित्रसेन आकर सिंहासन पर बैठ गये। उनका आदेश पाकर महामंत्री ने दरबारियों को संबोधितकर कहा–"महाशयो, हमारे राज्य में पहले जो कर लगाये गये हैं और जो अमल में हैं, वे नाम मात्र के कर हैं। आप सब जानते हैं कि ऐसी हालत में हमारे दयालू महाराजा ने उन करों को आधा मात्र चुकाने का कानून बनाकर हमारे प्रति बहुत बड़ी कृपा की है। उस नाम मात्र के करों के द्वारा राज्य का शासन कैसे चलावे, यह अब हमारे सामने एक समस्या बन गई है?" ये शब्द कहकर मंत्री थोड़ा सांस लेने के लिए रुक गये?

इस बीच एक सभासद ने उठ खड़े होकर पूछा–"क्या जनता पर कर न लगावे तो राज्य का शासन चल नहीं सकता?"

यह सवाल सुनकर सारे दरबारी चकित रह गये। प्रधान मंत्री को लगा कि उसका दिमाग ही चकरा रहा है! उसने
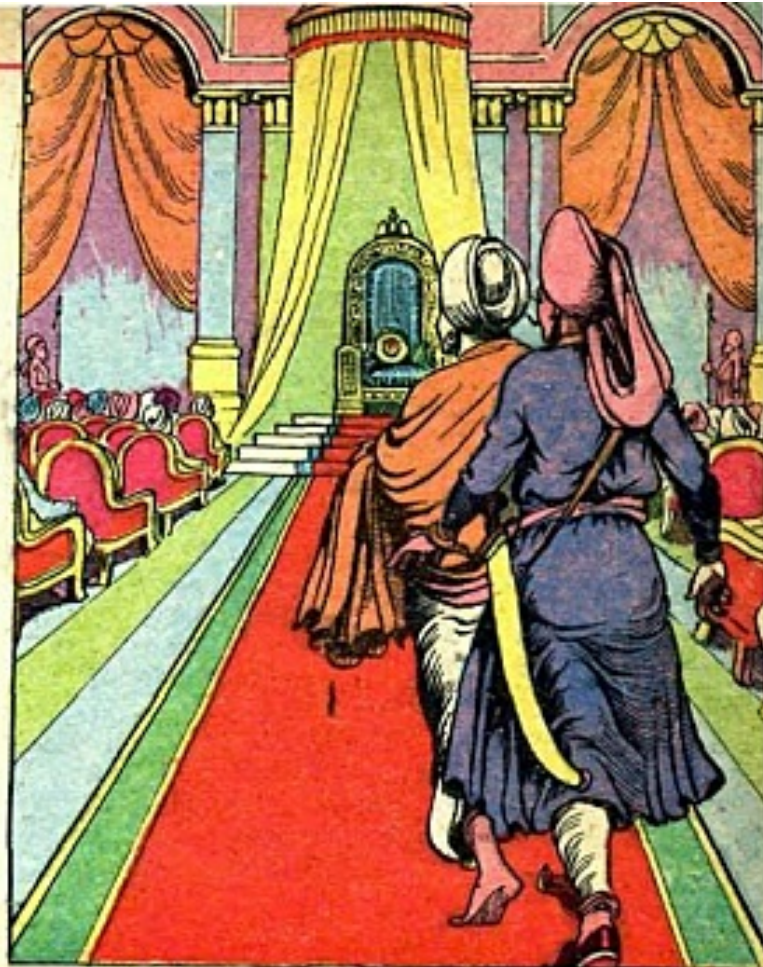
उस दरबारी की ओर तीक्ष्ण दृष्टि डालकर पूछा–"तब तो आप ही लोग विचार कीजिए! हमारे राज्य की आबादी कितनी है? इतने सारे लोगों को आराम से जीवन यापन करना है तो कितनी तरह की सुविधाएँ चाहिए? स्वास्थ्य की रक्षा के लिए क्या दवादारू की ज़रूरत नहीं होती? बच्चों के लिए शिक्षा की आवश्यकता नहीं? अलावा इसके पराये देशों के राजा किसी भी वक़्त हम पर हमला कर सकते हैं? उन हमलों को रोकने के लिए क्या सेना की ज़रूरत नहीं है? अगर हम कर न लगावें तो इन सारे कामों के लिए धन कहाँ से आयेगा?

दरबार में कानाफूसी होने लगी। इतने में एक ने खड़े होकर निर्भयतापूर्वक सुझाया–"महाराज, जो कर घटाये गये हैं, उन्हें फिर से लगाते समय हमें भलीभांति सोचने की ज़रूरत है। हमारे राज्य में ही नहीं बल्कि दूसरे राज्यों में भी महाराजा का यश इस वक़्त फैलता जा रहा है, ऐसी हालत में नये कर लगाने पर आप का यश कपूर की भांति गलकर गायब हो सकता है। राजाओं का अपने वचन से मुकर जाना कोई साधारण बात नहीं है।"

इसलिए प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होता है कि वह सबसे पहले यह जान ले कि कर का क्या मतलब होता है? और वे क्यों लगाये जाते हैं?" मंत्री यों कहता जा रहा था, तब राजा चित्रसेन ने मंत्री की ओर ऐसी दृष्टि डाली, मानो वे भी कुछ कहना चाहते हैं, इसलिए मंत्री मौन रह गया।

तब राजा ने कहा–"मंत्री महोदय का कहना उचित ही मालूम होता है! पर अब सवाल यह है कि एक बार हमने जिन करों को घटाया है, उन्हें फिर लगावे तो क्या पुरानी पद्धति के अनुसार उन्हें वसूल कर सकते हैं?"

इस चेतावनी में राजा को एक वास्तविकता का बोध हुआ। वह यह कि वे जब से गद्दी पर बैठे हैं, तब से लेकर अब तक जो यश कमाया है, वह कुछ ही क्षणों में गायब हो सकता है! इसलिए खजाना भरने के लिए शायद और कोई मार्ग हों तो उन पर विचार करना चाहिए!

राजा फिर बोले–"हमने करों के संबंध में एक बार जो निर्णय लिया, उसे बदलना नहीं चाहते! नये कर लगाने का सवाल उठ ही नहीं सकता! यही हमारा निर्णय है! महामंत्री ने सारी स्थिति समझाई है, इसलिए आप लोग विचार कीजिए कि हमें क्या करना होगा?"

सारे दरबार में शांति छा गई। सब एक दूसरे का चेहरा देखने लगे, मगर किसी की समझ में नहीं आया कि क्या सुझाया जाय? एक-दो मिनट बाद सेनापति समरसेन ने उठकर कहा–"महाराज, खजाना भरने की समस्या कोई बड़ी नहीं है। इसका उपाय मैं बता सकता हूँ, मगर यह बड़ी गुप्त बात है! इसलिए आप को एकांत में ही बता सकता हूँ।"

इसकी स्वीकृति के रूप में सभी दरबारियों ने तालियाँ बजाईं। इसके बाद यह प्रबंध हुआ कि उस दिन रात को दस बजे के समय सेनापति उद्यान वन में राजा से मिलकर उस गुप्त बात का निवेदन करे।

पूर्व निर्णय के अनुसार रात के दस बजे उद्यान में राजा से मिलकर सेनापति समरसेन ने निवेदन किया–"महाराज, हमारे खजाने को भरने के लिए बहुत ज्यादा सोचने की ज़रूरत ही नहीं है। इस समय की स्थिति को देखते हुए हमारे राज्य में एक पैसा भी अतिरिक्त रूप में वसूल होने की संभावना नहीं है। हमारे सामने तो इस वक़्त ये ही समस्याएँ हैं न? धन कैसे प्राप्त करें? जनता को सुखी रखते हुए हमारे राज्य को राम राज्य कहाने के यश को हम कैसे क़ायम रखें?

इसके वास्ते मुझे एक ही उपाय सूझ रहा है। हम पराये देशों पर हमला करके उनके खजानों को लूट ले तो हमारी समस्या हल हो जाएगी! महाराज, यह भी तो राज-धर्मों में से एक है। ऐसी ही आवश्यकताओं के वास्ते ही तो आप सेनापति और सेना का पोषण करते हैं।"

सेनापति की बातें सुन राजा चित्रसेन थोड़ी देर तक सोचते रहें, तब बोले–"तुम्हारा सुझाव तो बड़ा ही अच्छा है, मगर इसमें जो उलझन की बातें हैं, उन पर तुमने शायद विचार नहीं किया। वास्तव में हमारा राज्य ही एक टापू है। इसके चारों ओर समुद्र हैं। इन समुद्रों

को पार करके पड़ोसी राजाओं पर हमला करना हो तो हमारे लिए कितना नौका-बल और सैनिक बल चाहिए? क्या तुमने इस बात पर भी विचार किया है?"

"महाराज, आप इस नौका-बल और सैनिक बल की बात मुझ पर छोड़ दीजिएगा।" सेनापति ने जवाब दिया।

"अच्छी बात है। तब तो यह सारी जिम्मेदारी तुम्हारी है। हमारी सैनिक शक्ति को बढ़ाना है तो कई नये युवकों को सेना में भर्ती करना पड़ेगा। इस वास्ते राजा के आदेश की ज़रूरत होगी। लो, हमारी इस राजमुद्रिका का उपयोग करो।" कहकर राजा ने अपनी उंगली की अंगूठी निकालकर सेनापति के हाथ दे दी।

सेनापति राजा से विदा लेकर चला गया। सेना के दलपतियों का समावेश करके उन्हें सारी स्थिति समझाई, तब कहा—"सारी बातें ठीक हैं, मगर एक ही शंका सता रही है।"

"वह कैसी शंका है?" दलपतियों ने पूछा।

सेनापति ने समझाया—"हम लोग सैनिकों को साथ ले आसपास के द्वीपों पर इसलिए हमला करना चाहते हैं कि वहाँ के ख़जानों को लूटकर ले आवें! लेकिन उन पर अधिकार करके शासन करने के लिए नहीं; इस कार्य के लिए मैं समझता हूँ कि इस वक़्त हमारे पास जो सैनिक बल है, वही पर्याप्त है, एक बात और है—जब हम सेना के साथ इस द्वीप को छोड़कर चले जायेंगे तब मौक़े की प्रतीक्षा करनेवाले राजद्रोही जनता को उकसाकर विद्रोह कर सकते हैं। ऐसी हालत में हमारे राजा और उनके रिश्तेदारों की रक्षा कौन कर सकते हैं?"

"जी हाँ, यह भी एक जटिल समस्या है। बिना सेना के राजा किसी काम के नहीं होते।" एक दलपति ने अपनी राय बता दी।

सेनापति समरसेन कुछ कहने जा रहा था, तब एक वृद्ध योद्धा ने ऊँचे स्वर में कहा–"सेनापतिजी! कुंडलिनी देवी की कृपा से इस वक़्त मुझे एक उपाय सूझ रहा है।"

इस पर सब ने उनकी ओर देखा। तब वृद्ध ने कहा–"सुनिये, किसी भी देश में विद्रोह या विप्लव मचाना है तो इस वास्ते युवकों को ही आगे आना पड़ता है। इसलिए मेरे ख्याल से हमारे देश के सारे युवकों को किसी प्रकार से आकृष्ट करके सेना में भर्ती करना सब से उत्तम उपाय है।"

यह सुझाव प्रधान सेनापति के साथ वहाँ पर उपस्थित सभी लोगों को पसंद आया। उन लोगों ने उसी वक़्त आपस में परामर्श करके यह आदेश जारी किया कि राज्य के पंद्रह तथा चालीस साल के बीच की अवस्थावाले सेना में भर्ती हो जायें। इस वास्ते आवश्यक आज्ञा पत्र राज मुद्रिका के साथ तैयार किये।

दूसरे दिन से सैनिक आज्ञा पत्र लेकर प्रत्येक गाँव में गये, प्रत्येक युवक को सेना में भर्ती करने लगे। मगर कुछ लोगों ने सेना में भर्ती होने से अपनी अनिच्छा प्रकट करते हुए विनती की–"महाशय, चाहे तो राजा से कह दीजिएगा कि वे हम पर नये कर लगवा दे, हम खुशी से देने को तैयार हैं। लेकिन पराये देशों पर हमला करने के वास्ते हमें ज़बर्दस्ती सेना में भर्ती न कीजिएगा। हमें कृपया अपने माता-पिता और बीबी-बच्चों से दूर न कीजिएगा।"

लेकिन आज्ञा-पत्रों के साथ जो सैनिक देहातों में गये थे, वे सेना में भर्ती होने के इच्छुक युवकों को ख़ुशी के साथ भर्ती करते गये और जो भर्ती होना नहीं चाहते थे, उनके हाथ-पैर बांधकर पालकियों में डाल नगर में ढो लाये।

ज़बर्दस्ती सैनिक बनने की इच्छा जो लोग नहीं रखते थे, वे सैनिकों की आँखें

बचाकर भाग गये, आखिर राजा से शिकायत की। राजा ने उनकी सारी बातें सुनकर समझाया—"तुममें से कुछ लोगों ने मेरा यशोगान करते कहानियाँ और काव्य भी रचे हैं न? ऐसी हालत में मैं फिर से कर बढ़ाऊँगा तो मुझ पर आप लोगों को दूषण कविता करने का मौक़ा देनेवाला मैं साबित हो जाऊँगा। इसलिए अब हम कुछ नहीं कर सकते। हम जो निर्णय करते हैं, उसका उल्लंघन करना हमारे वंश की प्रथा के विरुद्ध है।"

इसके बाद जल्द ही सैनिकों का संगठन पूरा हुआ। एक शुभ मुहूर्त पर कुंडलिनी राज्य की सेनाएँ नावों पर सवार हो गईं।

राजा चित्रसेन ने आदेश दिया—"अब आप लोग रवाना हो जाइये।" तभी दक्षिणी दिशा के आसमान में अत्यंत वेग के साथ प्रयाण करते हुए एक प्रकाशमान धूमकेतु दिखाई दिया। उसे देख सब लोग डर के मारे कांपते चिल्लाने लगे—"यह तो अमंगलकारी है! अनिष्टकारी है!"

राजा की बगल में खड़े दरबारी ज्योतिषी ने कहा—"यह धूमकेतु विपदा का कारक है। नावों को रवाना होने से रोक दीजिए। एक और शुभ मुहूर्त रखा जाएगा।"

ये बातें सुन सेनापति समरसेन ने क्रोध में आकर कहा—"ऐसे निरर्थक अंध विश्वासों के वशीभूत हो हमारे चण्ड, प्रचण्ड व पराक्रमी सैनिकों का अपमान मत कीजिएगा, आखिर धूमकेतु उनका क्या बिगाड़ सकता है?"

दरबारी ज्योतिषी ने कई प्रकार से समझाया, पर सेनापति ने न माना। राजा चित्रसेन ने भी सेनापति के निर्णय का समर्थन किया। लाचार हो ज्योतिषी वहाँ से हट गया।

सेनापति समरसेन का आदेश मिलते ही नावों के लंगर खोलकर पाल उठाये गये। नावें दक्षिणी दिशा में प्रकाशमान धूमकेतु के अभिमुखी हो रवाना हो गईं।

(और है)

पद-त्याग

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ पर से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा–" राजन, साधारणत: लोग यह सोचा करते हैं कि दुनिया उन्हें और उनकी प्रतिभा का समुचित रूप में आदर नहीं करती। अगर मालिक अपने नौकर की सेवा की प्रशंसा करके उसका सम्मान करे तो वह फूला नहीं समाता, लेकिन दयानिधि जैसे व्यक्ति की सेवा को पहचानकर राजा ने उसे सबसे ऊँचा पद दिया तो उसने उसे अस्वीकार किया। आप के श्रम को भुलाने के लिए मैं दयानिधि के पद-त्याग की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनिये।"

बेताल यों सुनाने लगा: कलिग देश के राजा मार्ताण्ड के यहाँ दयानिधि नामक

बेताल कथाएँ

कलिंग के दुर्ग को घेर लिया। दयानिधि ने पहले ही सोच रखा था कि ऐसी हालत उपस्थित होने पर क्या करना चाहिए; इसलिए उसने तत्काल दुर्ग की रक्षा के लिए बचे हुए सैनिकों तथा अन्य युवकों को भी क़िले की दीवारों पर चढ़ाया और शत्रु-सैनिकों पर शस्त्रों के साथ पत्थर व अग्नि बाण बरसाकर उनके बीच बीभत्स पैदा किया। जो शत्रु बच रहें, वे भाग गये; दयानिधि ने मृत सैनिकों को गड़वा दिया और घायल सैनिकों का दुर्ग के भीतर इलाज करवाया।

एक दलपति था। वह एक वीर के रूप में कहाँ तक सच्चा साबित हो सकता है, यह तो कुछ कहा नहीं जा सकता, मगर वह हमेशा युद्ध-तंत्र के बारे में सोचते ऐसी योजनाएँ बनाया करता था, जब कि विभिन्न प्रकार की मुसीबतें पैदा हो जायें तो उनका सामना कैसे किया जायें।

एक दिन राजा मार्ताण्ड ने शिकार खेलने जाते हुए दुर्ग की रक्षा का भार दयानिधि को सौंप दिया। पड़ोसी देश के राजा वीरवर्मा ने अपने भेदियों के द्वारा जान लिया कि राजा मार्ताण्ड के सभी प्रमुख सैनिक अधिकारी शिकार खेलने गये हुए हैं, यह खबर मिलते ही वीरवर्मा ने अचानक

राजा को जब अपने दुर्ग पर शत्रु राजा के हमले का समाचार मिला, तब वे तुरंत लौट आये और दयानिधि की विजय पर उसकी प्रशंसा की; मगर उसके द्वारा शत्रु-सैनिकों का इलाज कराना उन्हें पसंद न आया। इसलिए सब को फांसी की सजा सुनाकर उन्हें मरवा डाला।

मार्ताण्ड का क्रोध इससे संतुष्ट नहीं हुआ। वे अपनी सारी सेनाओं को लेकर वीरवर्मा पर आक्रमण करने चल पड़े। वीरवर्मा ने पहले ही अनुमान लगाया था कि मार्ताण्ड उस पर हमला कर सकता है, इसलिए अड़ोस-पड़ोस के देशों के राजाओं की मदद लेकर मार्ताण्ड की सेनाओं को बुरी तरह से हराया; उन्हें

बन्दी बनाकर कारागार में रखा। दयानिधि बचकर भाग निकला और एक साधारण नागरिक के रूप में गुप्त रूप से अपना जीवन बिताने लगा।

वीरवर्मा के सैनिकों ने कलिंग की सारी संपत्ति लूट ली और वे नगर की जनता को खूब सताने लगे। वीरवर्मा ने कलिंग नगर पर अधिकार कर लिया, पर वह उस नगर को शत्रु नगर ही मानता रहा।

दयानिधि इसे सहन न कर पाया, उसने कुछ साहसी युवकों को इकट्ठा किया, गुप्त रूप से योजना बनाकर एक दिन रात को वीरवर्मा तथा उसके प्रमुख अधिकारियों को बन्दी बनाया और राजा मार्ताण्ड को कारागार से मुक्त करवा दिया।

अपने राजा के मुक्त होते ही कलिंग नगर के निवासी शत्रु सैनिकों पर टूट पड़े और उन सब को मार डाला।

मार्ताण्ड ने गद्दी पर बैठते ही वीरवर्मा को शिरच्छेद का दण्ड सुनाया और उसके कर्मचारियों को फांसी की सजा दी। दयानिधि की निपुणता की प्रशंसा की और शीघ्र ही उसे प्रधान सेनापति के पद पर नियुक्त करने की घोषणा भी कर दी।

पर उस दिन रात को दयानिधि ने एकांत में राजा के दर्शन करके निवेदन किया—"महाराज, आप कृपया इस बात के

लिए मुझे क्षमा कर दीजिए कि आप मुझे जो प्रधान सेनापति का पद देने जा रहे हैं, मैं उसे स्वीकार नहीं कर सकता। उस पद को संभालने की शक्ति मैं नहीं रखता।"

राजा मार्ताण्ड ने उसकी ओर परखकर देखा, कहा—"अच्छी बात हैं, तुम सवेरा होने के पहले ही इस राज्य को छोड़कर चले जाओ, वरना तुम्हारे प्राणों की खैर नहीं।"

"जो आज्ञा, महाराज!" यों कहकर दयानिधि राजा से विदा लेकर उसी रात को उस देश को छोड़कर चला गया।

बेताल ने यहाँ तक कहानी सुनाकर कहा—"राजन, दयानिधि के द्वारा पद-त्याग करने का कारण क्या है? क्या

इसलिए कि वह उस जिम्मेदारी का पद संभाल नहीं सकता है? साथ ही राजा के इस विचित्र निर्णय का क्या मतलब है? उन्हें दयानिधि को क्यों देश-निकाले का दण्ड देना पड़ा? दयानिधि ने राजा की ऐसी मदद की जो न कोई कर सकता था और न वह मदद कभी भुलाई ही जा सकती थी। दयानिधि ने ही वास्तव में राजा मार्ताण्ड को फिर से गद्दी दिलाई। ऐसी हालत में उसे साधारण दलपति के रूप में ही सही, रहने दिया जाय तो क्या नुक़सान था? या, राजा ने प्रसन्न होकर जो पद दयानिधि को देना चाहा उसे तिरस्कार करने पर वे उस पर नाराज़ हो गये? इन संदेहों का समाधान जानकर भी न देंगे तो आप का सिर फूट जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने जवाब दिया— "राजा मार्ताण्ड ने इस विश्वास के बल पर दयानिधि को प्रधान सेनापति बनाना चाहा कि दयानिधि अपार राजभक्ति रखता है; मगर जब दयानिधि ने राजा के सत्कार का तिरस्कार किया, तब राजा ने भांप लिया कि दयानिधि को प्रेरित करनेवाली शक्ति राजभक्ति नहीं बल्कि देश-प्रेम है। वैसे स्वभाव से भी दयानिधि मानवतावादी है। इसी वजह से उसने घायल शत्रु सैनिकों का इलाज करवाकर मृत सैनिकों को गड़वा दिया। अगर वीरवर्मा ने जनता को सताया न होता तो संभवतः दयानिधि मार्ताण्ड को फिर से राज्य दिलाने का प्रयत्न न करता। यह भांपकर ही मार्ताण्ड ने उसे देश-निकाला दण्ड दे दिया। एक देश प्रेमी के लिए यह सब से बड़ा दण्ड था। अगर राजा ऐसा दण्ड न देकर दयानिधि को छोड़ देते तो भविष्य में उनके शासन में जनता को यातनाएँ भोगते देख दयानिधि उन्हें गद्दी से उतार सकता है, इसीलिए राजा ने ऐसा निर्णय लिया है।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

"**क्या** काम बन गया ?" अपने पति को हाथ मुँह धोने के लिए पानी देते हुए पार्वती ने पूछा ।

राजेश ने पानी पीकर कहा—"वैसे वर पक्षवालों को हमारी बेटी रागिनी पसंद आई, लेकिन दस हज़ार दहेज़ माँगते हैं ।"

यह ख़बर सुनकर पार्वती चकित रह गई । उस दंपति के इकलौती बेटी है रागिनी । वैसे वह ज़्यादा ख़ूबसूरत भी नहीं ; साधारण होती है । रागिनी की पैदाइश से लेकर राजेश उसकी शादी के वास्ते जो कुछ जोड़ता गया, वह कुल मिलाकर पाँच हज़ार रुपये थे ।

रागिनी ने दर्वाजे की ओट में रहकर अपने माँ-बाप की बातचीत सुन ली और गुस्से में आकर बोली—"जो व्यक्ति सिर्फ़ दहेज़ के वास्ते मेरे साथ विवाह करना चाहता है, वह मुझे पसंद नहीं है ।"

"तुम चुपचाप यहाँ से चली जाओ ।" पार्वती अपनी बेटी पर खीझ उठी । इसके बाद पार्वती अपने पति से बोली—"सुनो जी, इन लोगों को तो कम से कम लड़की पसंद आई, हम पैसों की चिंता करें तो यह रिश्ता भी टूट जाएगा । फिर इस ज़िंदगी में लड़की की शादी न होगी ।"

"तब तो मैं क्या करूँ ? किसी घर में क्या सेंध लगाऊँ ?" राजेश ने पूछा ।

दोनों ने देर तक वाद-विवाद किया, मगर यह निर्णय न कर पाये कि पाँच हज़ार रुपये और कहाँ से लावे ? इस बीच अंधेरा फैल गया । इतने में किसी ने किवाड़ पर दस्तक दिया । राजेश ने जाकर किवाड़ खोला, बाहर कोई नया व्यक्ति खड़ा था । वह बोला—"रामगुप्त ने यह संदूक़ आप को सौंपने के लिए कहा है । यह भी कहा है कि फिलहाल

चंद्रकांत वर्मा

वे आठ हज़ार रुपये के गहने भेज रहे हैं। क्या सेठजी से इस संबंध में कुछ कहना है?" इन शब्दों के साथ आगंतुक ने एक संदूक़ राजेश के हाथ थमा दिया।

राजेश को यह सब बड़ा विचित्र लगा। रामगुप्त से वह अपरिचित था। इसलिए उसने नये व्यक्ति से पूछा—"किस रामगुप्त ने इसे भेजा है?" राजेश की बातें सुनने पर नये व्यक्ति के मन में थोड़ी शंका सी पैदा हो गई। उसने मकान के सामने स्थित पीपल की ओर नज़र दौड़ाकर पूछा—"सेठजी ने पीपल के सामनेवाले मकान में रहनेवाले नारायण के हाथ देने को कहा है। क्या आप नारायण तो नहीं हैं?"

राजेश कोई जवाब देने जा रहा था, तभी पार्वती ने कहा—"तुम्हें जहाँ पहुँचना था, सही जगह पहुँच गये। वास्तव में रामगुप्त को कल ही गहने भेजना था। देरी क्यों हो गई, इसका पता तो लगाओ।"

"अच्छी बात है!" यों कहकर वह नया व्यक्ति वहाँ से चला गया।

इसके बाद राजेश ने झट से किवाड़ बंद किये, तब संदूक़ खोला। उसमें आँखों को चौंधियानेवाले आभूषण भरे थे।

"ओह! आठ हज़ार रुपयों के गहने! समझ लो, अब हमारी बेटी की शादी हो गई।" पार्वती खुशी में आकर बोली।

"न मालूम ये गहने किसके हैं? मेरी शादी कैसे होगी?" रागिनी ने कहा।

"तुम मुँह बंद कर यहाँ से चली जाओ।" यों डांटकर पार्वती ने अपनी बेटी को घर के अंदर भेज दिया।

"ईश्वर ने हम पर मेहर्बानी करके बेटी की शादी के वास्ते ये गहने भिजवा दिये हैं। दो दिन के अन्दर इन्हें गलाकर बेच दूंगा।" राजेश ने कहा।

"ईश्वर ने तो मौक़ा दिया, मगर हमें तो उसका सदुपयोग करना चाहिए! सवेरा होने तक सेठ रामगुप्त को मालूम हो जाएगा कि गहने जहाँ पहुँचना चाहिए, पहुँचे नहीं! कल वह व्यक्ति आकर हममें

गहने माँगेगा! तब हम क्या जवाब दे सकते हैं?" पार्वती ने शंका प्रकट की।

"तब तो एक काम करेंगे! मैं इस संदूक़ को पिछवाड़े में गाड़ दूँगा। कोई आकर माँग ले तो हम यही बतायेंगे कि इस संबंध में हम कुछ नहीं जानते। उसने गहनोंवाला संदूक़ लाकर जब हमें दिया, तब किसने देखा है?" राजेश ने कहा।

इसके बाद पति-पत्नी ने उस संदूक़ को पिछवाड़े में नारियल के पेड़ के नीचे गाड़ दिया।

दूसरे दिन सवेरे ही द्वार पर पहुँचकर कोई चिल्लाने लगा। पति-पत्नी ने एक दूसरे को हिम्मत बंधवाई, तब किवाड़ के पास पहुँचे। पिछली रात को जो व्यक्ति गहनों का संदूक़ लाया था, वही ड्योढ़ी पर खड़े हो घबराये हुए स्वर में कह रहा था– "ओह, कैसा धोखा है! कैसा दगा है! वह संदूक़ तो बगल की गली के निवासी नारायण का है। सेठ साहब मेरी जान ले रहे हैं। तुम लोग चुपचाप गहनों का संदूक़ लाकर दे दो।"

राजेश ने इतमीनान से कहा–"सवेरे ही सवेरे तुम दारू तो पीकर नहीं आये? वरना यह कैसा शोर तुमने मचा रखा है?"

"शायद कोई पागल होगा; किवाड़ बंद कर आ जाओ।" पार्वती ने सलाह दी।

आगंतुक और जोर-शोर से चिल्लाने लगा। राजेश ने उसकी परवाह किये बिना कहा–"हम नहीं जानते कि तुम अंधेरे में न मालूम गहनों का वह संदूक़ किसके घर दे आये हो? हम लोग अपनी बेटी की शादी रचने जा रहे हैं। तुम सवेरे ही यह क्या गड़बड़ मचा रखे हो?" पार्वती ने भी राजेश का समर्थन किया।

"आप को श्रम से छुट्टी मिल गई है। यह शादी होने की नहीं है।" ये शब्द कहते खंभे की ओट में से दूल्हे का पिता बाहर आया। उसे देख पार्वती और राजेश के चेहरे पीले पड़ गये। दूल्हे का पिता बोला–"हमें एक पैसे भी दहेज की ज़रूरत

नहीं है। हम सिर्फ़ परिवार की प्रतिष्ठा और संप्रदाय चाहते हैं। आप के चरित्र और स्वभाव का परिचय पाने के ख्याल से ही हमने बड़ी रक़म दहेज़ के रूप में माँग की और मुलम्मे चढ़ाये गये गहनों के द्वारा स्वांग रचाया। हमें तो आप लोगों की असलियत का पता चल गया। आप लोग धन के वास्ते गला काटने में भी पीछे हटनेवाले नहीं हैं। आप के बच्चों में भी ये ही गुण होंगे! हम ऐसी लड़की के साथ शादी करना पसंद नहीं करते!"

उसी वक़्त अचानक रागिनी बाहर से आई और बोली—"अजी, आप अब अपने बेमतलब का तर्क रहने दीदिए। क्योंकि माता-पिता की आकृति बच्चों को शायद प्राप्त हो सकती हो, लेकिन उनके गण भी बच्चों को प्राप्त हो जाये, यह कोई ज़रूरी नहीं है। मेरे माता-पिता जाग पड़े तो गहनों का संदूक़ पुलिस के हाथ सौंपना संभव नहीं है, इसलिए मैं सवेरे ही उठकर गहनों का संदूक़ सिपाहियों के हाथ सौंपकर आ रही हूँ। इसलिए आप सोने के मुलम्मे चढ़ाये गये अपने गहनोंवाले संदूक़ को थाने से ले लीजिए। अगर यह शादी न हुई तो हमें कोई भारी नुक़सान होनेवाला नहीं है।" यों कहकर रागिनी घर के भीतर चली गई।

रागिनी के मुँह से ये शब्द सुनकर राजेश और पार्वती अवाक् रह गये। मगर दूल्हे का पिता सर झुकाकर वहाँ से चला गया।

उस दिन शाम को रागिनी पौधों को पानी सींच रही थी, तब दूल्हा वहाँ पर आ पहुँचा और बोला—"रागिनी, मेरे पिता ने जो नाटक रचा है, उससे मैं बिलकुल अपरिचित हूँ। तुम लोगों का इस तरह जो अपमान हुआ है, उसके वास्ते मैं क्षमा माँगने आया हूँ। अगर तुम मुझे क्षमा कर सकोगी तो मैं तुम्हारे साथ शादी करने को तैयार हूँ।"

दूल्हे की बातें सुन रागिनी ने लज्जा के मारे अपना सिर झुका लिया।

सही खोज

श्रावस्ती नगर पर राजा प्रसेनजित का शासन था। उन दिनों में किसी दूर देश से श्रावस्ती में एक ब्राह्मण आया। भाग्यवश उस ब्राह्मण को संपन्न परिवारों के वैश्यों का आश्रय मिला। प्रति दिन उसे अनायास ही अन्न और वस्त्र तो प्राप्त हो जाता था, साथ ही दान-दक्षिणा और पुरस्कार भी मिल जाया करते थे। ब्राह्मण अकेला था, खर्च कम था, इस कारण कुछ ही दिनों में उसके पास काफी धन इकट्ठा हो गया। उसे एक हज़ार सोने के दीनारों में बदलकर जंगल में एक जगह गाड़ दिया।

उस ब्राह्मण के बीबी-बच्चे, भाई-बहनें या रिश्तेदार तक कोई न थे। इसलिए उसकी सारी दृष्टि सोने पर केन्द्रित थी। वह रोज जंगल में चला जाता, अपने गाड़े हुए धन को खोदकर देख लेता, तब घर लौट आता। क्योंकि उसके मन में हमेशा यह शंका बनी रहती थी कि कहीं कोई उसे खोदकर न ले गया हो।

एक दिन उसने जंगल में जाकर खोदकर देखा, पर वहाँ उसका सोना न था। कोई उसे खोदकर ले गया था। इस पर ब्राह्मण पागल सा हो गया और रोते-बिलखते नगर को लौट आया, उसे जो भी दिखाई देता उसे अपनी यह व्यथा सुनाने लगा। मगर कोई भी उसे सांत्वना देने में सफल न हुए। आखिर वह ब्राह्मण यह कहते नदी की ओर दौड़ पड़ा—"मैंने इतने दिनों से जो धन जोड़ रखा था, वह सारा धन खो गया है। उस धन को खोकर मैं ज़िंदा क्यों रहूँ? मैं नदी में कूदकर आत्म-हत्या कर लूंगा।"

उस समय राजा प्रसेनजित नदी में नहाकर अपने महल को लौट रहे थे, उन्होंने एक ब्राह्मण को आत्महत्या का

२५ वर्ष पुरानी चन्दामामा की कहानी

प्रयत्न करते देख समझाया—"हे पगले ब्राह्मण, तुम आत्म-हत्या क्यों करते हो? इस राज्य में अगर कहीं चोरी हो जाती है तो इसका पता लगवाने के लिए मैं जो हूँ! तुम्हारे धन की चोरी करनेवाले को पकड़ लेंगे, वरना हम अपने खजाने से दिलायेंगे। तुमने जहाँ अपना धन गाड़ रखा था, उस स्थान के कोई चिह्न हैं?"

"महाराज, मैंने जहाँ अपना धन गाड़ रखा था, वहाँ पर जंगली तुरई का एक पौधा था। लेकिन इस वक़्त वह भी गायब है।" ब्राह्मण ने कहा।

"जंगली तुरई का पौधा सच्चा निशान कैसे हो सकता है? ऐसे पौधे कई हो सकते हैं न?" राजा ने पूछा।

"महाराज, उस प्रदेश में वही एक जंगली तुरई का पौधा था।" ब्राह्मण ने जवाब दिया।

"तुमने वहाँ पर धन गाड़ रखा था न, यह बात और कौन कौन जानते हैं?" राजा ने पूछा।

"महाराज, मेरे सिवाय और कोई नहीं जानता, किसी को बताने के लिए भी अपना कहनेवाला मेरे कोई नहीं है। मेरे उधर जाते हुए आज तक किसी ने देखा भी नहीं है।" ब्राह्मण ने समझाया।

इसके बाद राजा ने अपने महल को लौटकर उस चोरी के बारे में ज़्यादा गंभीरतापूर्वक सोचा। राजा को जल्द ही
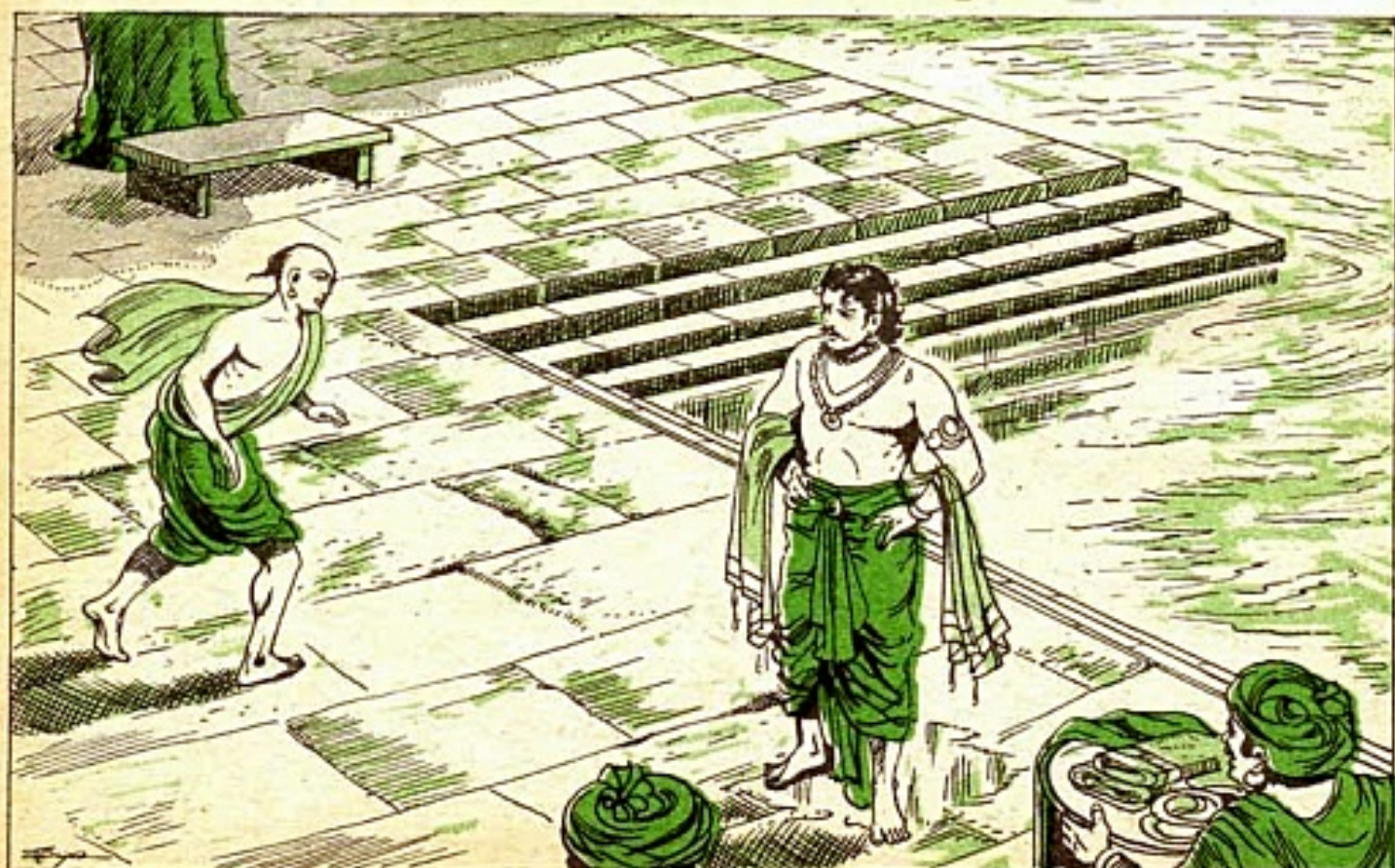
चोर को पकड़ने का उपाय सूझा। राजा ने उसी वक़्त मंत्री को बुलवाकर आदेश दिया–"मंत्री महोदय, मेरी तबीयत ठीक नहीं है। आप इसी समय हमारे नगर के सभी वैद्यों को बुलवा लीजिए।"

जल्द ही सारे वैद्य आ पहुँचे। राजा ने एक एक करके सब को अपने कमरे में बुलवाया और पूछा–"सुनो, तुमने कल और आज किन किन रोगियों को औषधियाँ दी हैं? कौन कौन जड़ी-बूटियाँ इस्तेमाल की हैं?" ये सवाल करते वैद्यों को भेज देते, मंत्री यह सब देखता रहा, मगर राजा का मतलब उसकी समझ में न आया।

अंत में एक वैद्य ने कहा–"महाराज, मैंने मातृदत्त नामक एक वैश्य श्रेष्ठ की बीमारी के लिए कल ही जंगली तुरई का रस इस्तेमाल किया है।"

राजा ने कुतूहलपूर्वक पूछा–"ओह, ऐसी बात है? तुम्हें वह पौधा कहाँ मिला?"

"महाराज, सारे जंगल को छानकर मेरा एक सेवक ले आया था।" वैद्य ने जवाब दिया।

"तब तो तुरंत उस सेवक को मेरे पास भेज दो।" राजा ने आदेश दिया।

वैद्य का सेवक आ पहुँचा, राजा ने उससे पूछा–"अरे, कल तुमने जब जंगली तुरई का पौधा खोद निकाला, तब उसके नीचे एक हज़ार सोने के दीनार मिल गये थे। उन्हें तुमने क्या किया?"
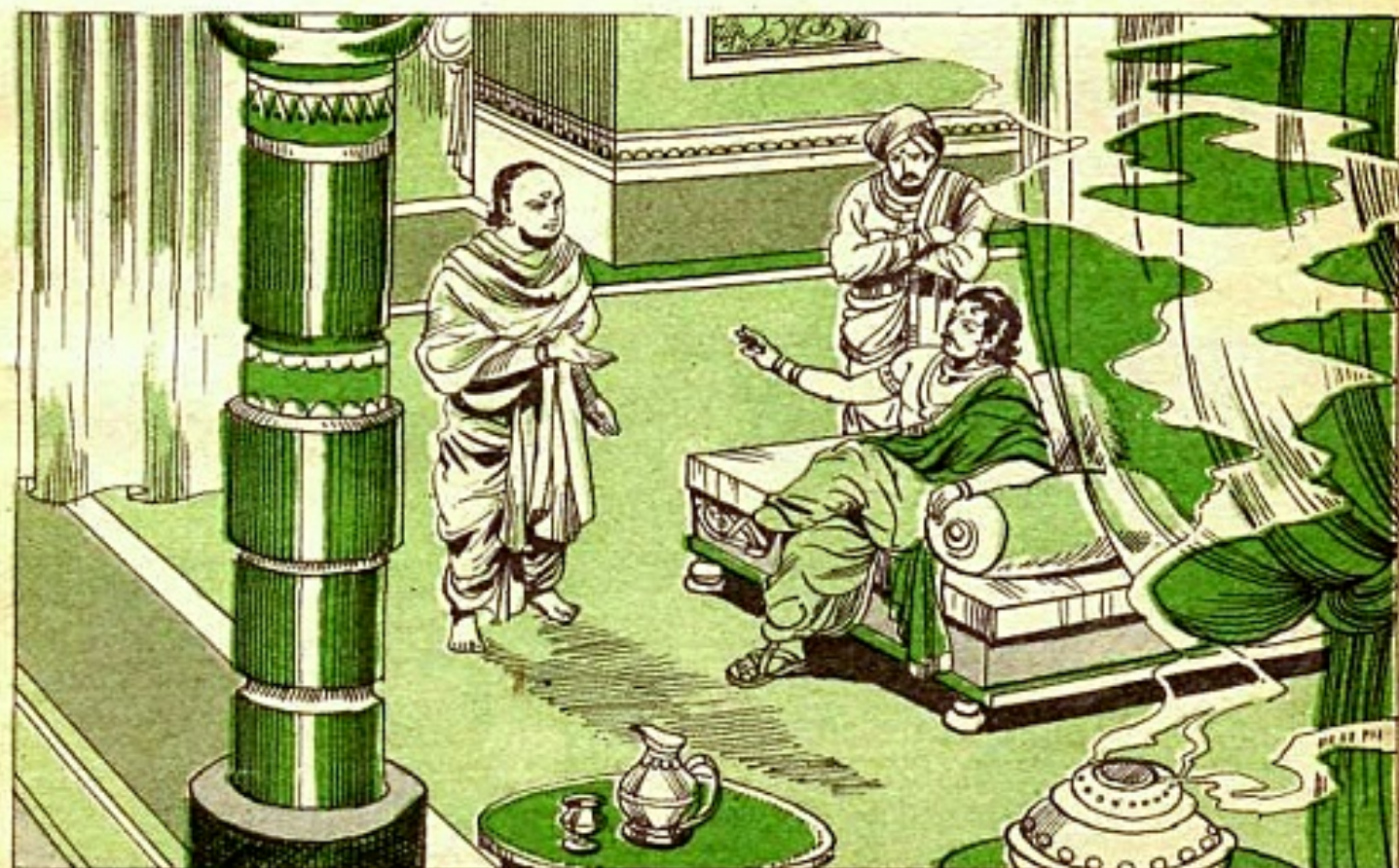
सेवक का चेहरा सफ़ेद पड़ गया। उसने सच्ची बात बताई—"महाप्रभू! मैंने अपने घर छिपा रखा है।"

"वे दीनार अमुक ब्राह्मण के हैं, तुम उसे दे दो।" राजा ने आदेश दिया।

"जी महाराज!" कहते वह सेवक राजा को प्रणाम करके चला गया।

मंत्री यह सब देखता रहा, पर उसकी समझ में न आया कि राजा ने किस प्रकार सोने के दीनार हड़पनेवाले का पता लगाया। उसने राजा से ही पूछकर यह रहस्य जानना चाहा।

मंत्री ने पूछा—"महाराज, मेरी समझ में नहीं आता कि आप इतनी आसानी से चोर का कैसे पता लगा पाये?"

राजा ने मुस्कुराकर यों समझाया—"चोरी के बारे में ब्राह्मण ने जो कुछ कहा, उसे सच मानकर मैंने चोर को पकड़ने के संबंध में विचार किया। नगर के इन लाखों नागरिकों में से एक ही ने चोरी की होगी। ब्राह्मण कहता है कि उसके द्वारा धन छिपाने की बात कोई नहीं जानता। निश्चित प्रदेश में धन के गाड़ने का समाचार जाने बिना वहाँ पर खोदने की ज़रूरत किसी को नहीं है सिवाय जंगली तुरई की जरूरत रखनेवाले के।

उस प्रदेश में चारों तरफ़ कहीं भी जंगली तुरई का पौधा नहीं है। यह बात हमें ब्राह्मण ही बता रहा है। अलावा इसके सिर्फ़ धन के वास्ते उस जगह को खोदनेवाला व्यक्ति जंगली तुरई के पौधे को वहीं पर फेंककर चला जाता है। पर जंगली तुरई के वास्ते खोदनेवाला हो तो उस पौधे और धन को भी ले जाता है।

जंगली तुरई के पौधे की जरूरत किसे होगी? वैद्य को ही। इस वास्ते मैंने सारे वैद्यों को बुलवा भेजा। जब जंगली तुरई के पौधे से इलाज करनेवाले वैद्य का पता चला, तभी चोर भी मेरे हाथ लग गया।"

ये बातें सुनने पर राजा प्रसेनजित की बुद्धिमत्ता पर मंत्री न केवल खुश हुआ बल्कि आश्चर्य चकित रह गया।

इन्द्र नामक व्यक्ति वेदकाल में या उसके पूर्व शायद एक व्यक्ति के रूप में रहे हों, लेकिन कालक्रम में इन्द्रत्व एक पद बन गया। उस पद का निर्वाह करनेवालों में सुशांत, विभू, मनोज तथा शीघ्र ही पदभ्रष्ट हुए नहुष भी हैं। कहा जाता है कि सौ यज्ञ करनेवाले इन्द्रत्व पाने के योग्य हो जाते हैं।

वैदिक कालीन इन्द्र तथा पुराण कालीन इन्द्र के बीच काफ़ी अन्तर दिखाई देते हैं। इसलिए वैदिक कालीन इन्द्र तथा पुराण कालीन इन्द्र के संबंध में जो विवरण हमें उपलब्ध होते हैं, उनके बारे में अलग रूप से हम जान लेंगे।

वैदिक कालीन भारतवासियों के लिए इन्द्र सर्वोत्तम आराध्य हैं। ऋग्वेद में इन्द्र के संबंध में २५० सूक्त हैं। किसी अन्य देवता के संबंध में इतने सूक्त नहीं हैं। इसके अतिरिक्त ५० सूक्तों में पाक्षिक रूप में इन्द्र की प्रशंसा है। इरान से आर्यों के भारत देश में आने के पहले ही इन्द्र शब्द प्रचलित था। इसकी उत्पत्ति के संबंध में हमें पूर्ण ज्ञान नहीं है। ये मुख्यत: वज्रधारी थे। नगरों का विनाश करनेवाले पुरंदर थे, दानव विनाशक थे। जल को बंधनों से मुक्त करनेवाले थे। युद्धों में इन्हें कभी पराजय प्राप्त न हुई थी।

वेदों में इन्द्र के अंग और प्रत्यंग का वर्णन हुआ है। उनके सर, धड़ और हाथ हैं। सोमपान करते समय उनके भाण्ड जैसे पेट का अनेक संदर्भों में वर्णन हुआ है। उनके ओंठ विशेष रूप से वर्णित हैं (सुशिप्र)। कहा जाता है कि उद्रेक में आने पर उनकी दाढ़ी खूब हिला करती थी। उनके केश कपिल वर्ण के थे।

उनका शरीर ही कपिललवर्ण (हरिवर्ण) था। उनके सोने के रंग के शरीर का भी यत्र-तत्र वर्णन हुआ है। उनके हाथ लंबे थे, बलिष्ठ थे; सुंदर थे। वे कामरूपी थे, अत्यंत सुंदर रूप धारण कर सकते थे।

इंद्र को विशेष प्रकार का वज्रायुध त्वष्ट से या काव्य उशन से प्राप्त हुआ था। पर ऐतरेय ब्राह्मणों में बताया गया है कि देवताओं ने यह आयुध इंद्र को दिया है। वज्रायुध का वर्णन विभिन्न प्रकार से हुआ है। वह लोहे से (अयस) निर्मित है, सोने का है, चार कोनोंवाला है, सौ कोनोंवाला है, एक हज़ार नोकोंवाला है, पैनी धारवाला है, वह पत्थर (अश्मन, पर्वत) का भी है। यह भी कहा जाता है कि इन्द्र धनुष और बाण भी रखते थे। उनके बाण सोने के थे, सौ नोकोंवाले थे, एक हज़ार परों से भरे थे। इनके अतिरिक्त समय-समय पर इन्द्र एक अंकुश (अथर्व वेद में) और एक जाल का भी उपयोग करते थे।

इन्द्र का रथ मनोवेग से भी तेज गतिवाला था। इन्द्र के प्रति विशेष रूप से "रथस्थ" शब्द का प्रयोग किया गया है; उनमें हरिवर्ण के दो घोड़े जुते होते थे। (जहाँ-तहाँ घोड़ों की संख्या सौ, हज़ार और ग्यारह सौ भी बताया गया।) इन्द्र के रथ और घोड़ों को निर्मित करनेवाले ऋभ थे।

वैसे सारे देवता सोमपान किया करते थे। मगर इन्द्र पूर्ण रूप से सोमपान के व्यसनी थे। एक स्थान पर कहा गया है कि पीने के वास्ते इन्द्र ने सोमरस की चोरी तक की है। इन्द्र के बाद देवताओं तथा मानवों में भी उल्लेखनीय पियक्कड़ वायु हैं। ज़्यादा सोमरस का पान करने पर इन्द्र अपनी असाधारण शक्ति और सामर्थ्य का प्रदर्शन करते थे। कहा जाता है कि वृत्र का वध करने के लिए इन्द्र ने तीन "तालाबों" का सोमरस पी डाला था। एक और संदर्भ में बताया गया है

कि इन्द्र ने एक ही घूंट में ३० तालाबों का सोमरस पी डाला। (न मालूम इस तालाब की माप क्या है?)

इन्द्र ने स्वयं एक सूक्त में बताया है कि सोमरस का पान करने पर उन्हें कैसे लगता है? वे साधारण मानवों की भांति मध्यपान के आधिक्य से बीमार पड़ने पर उसका इलाज कराने के लिए उन्हें "सात्रामणि" नामक यज्ञ करना पड़ा। इन्द्र दूध में शहद मिलाकर भी पिया करते थे।

इन्द्र बैल तथा भैंस का मांस भी खाया करते थे। ऋग्वेद में दो संदर्भों में दो प्रकार से बताया गया है कि उन्होंने सौ तथा तीन सौ भैंसों को खाया था।

३, ४ मण्डलों में ऐसी ऋचाएँ हैं जिनमें इन्द्र ने अपने जन्म के बारे में बताया है। इन्द्र ने अपनी माँ की बगल में से अस्वाभाविक रूप में जन्म लेना चाहा, उनके जन्म के होते ही आसमान में तेज छा गया। जन्मधारण करते ही उन्होंने सूर्य के चक्र को हिलाया, युद्ध किया, उनसे डरकर पृथ्वी और पहाड़ कांप उठे। देवता सब उनसे डर गये। एक जगह बताया गया है कि इन्द्र की माता गाय है। वह गाय से उत्पन्न बछड़ा (गार्स्टेय)। उनकी माता का नाम निस्टिग्री

भी बताया गया है। सायण आचार्य ने बताया है कि अदिति का मतलब यही है। अथर्वण वेद में कहा गया है कि इन्द्र तथा अग्नि को जन्म देनेवाली नारी का नाम एकाष्टका (प्रजापति की पुत्री) है। इन्द्र और अग्नि के पिता एक ही थे।

इन्द्र ने अपने पिता के पैर पकड़कर पीट-पीटकर उन्हें मार डाला था।

अनेक स्थानों पर बताया गया है कि इन्द्र की पत्नी का नाम इन्द्राणी है। पर ऐतरेय ब्राह्मणों के अनुसार इन्द्र के प्रसहा और सेना नामक दो पत्नियाँ थीं। कतिपय पंडितों का विचार है कि वेद संहिताओं तथा पुराणों के अनुसार भी

शचीदेवी ही इन्द्र की पत्नी है। एक जगह बताया गया है कि इन्द्र विलिस्तेंग नामक असुर (दानव) स्त्री पर मोहित हुए थे और उन्होंने असुरों के बीच स्त्रियों के साथ स्त्री रूप में तथा पुरुषों के साथ पुरुष रूप में अपना जीवन बिताया है।

इन्द्र के आत्मीय और सहचर मरुत्त थे। अनेक अवसरों पर इन लोगों ने युद्धों में इन्द्र की सहायता की है।

कुछ संदर्भों में हमें ऐसा लगता है कि इन्द्र ही सूर्य हैं। एक स्थान पर स्वयं इन्द्र बताते हैं कि वह मनु है और सूर्य है।

इन्द्र के बड़प्पन और शक्ति की भारी प्रशंसा हुई है। उनकी समता कर सकनेवाले कोई पैदा न हुए और पैदा न होंगे। कोई भी देवता उनसे महान नहीं बन सकते। उनकी समता तक नहीं कर सकते। उनका पराक्रम असाधारण है। उनके आदेशों का पालन वरुण और सूर्य को करना ही पड़ेगा। वह सारे विश्व के अधिपति हैं। "शक्र", "शचीवत" (शक्तिशाली) नामक शब्दों का प्रयोग केवल इन्द्र के प्रति ही ज्यादा हुआ है। कतिपय संदर्भों में वे "असुर" के रूप में भी संबोधित हुए हैं। (कहा जाता है कि वैदिक काल के प्रारंभ में असुर शब्द आदर सूचक था। वरुण और अग्नि के प्रति भी यह संबोधन हुआ करता था।)

सोमपान करने के उत्साह में मरुत गणों को साथ ले इन्द्र वृत्र का संहार करने चला गया। वृत्र तो पानी का अकाल पैदा करनेवाला राक्षस था। वृत्र का अर्थ बांध होता है। वृत्र को साँप भी बताते हैं। इस कारण यह कहा जाता है कि इन्द्र नदियों के बांधों को नष्ट कर नदी के जल को "मुक्त" किया करते थे। "जल के बांध बने" वृत्र की पीठ और चेहरे पर इन्द्र ने अपने वज्रायुध का प्रहार किया, जिससे बंधे हुए जल स्वेच्छापूर्वक बहने लगे। पर कहीं कोई ऐसा प्रसंग नहीं आता जहाँ इन्द्र के साथ वृत्र ने युद्ध किया हो।
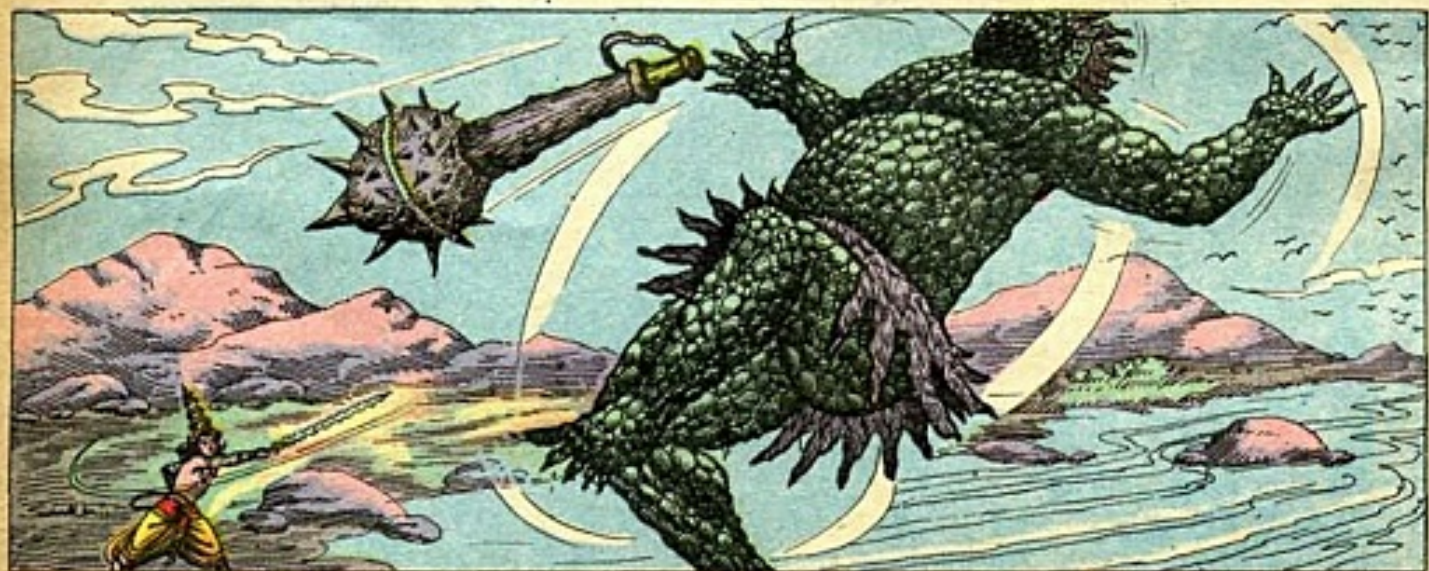
सिकंदर, राजा पुरु

ई. पू. चौथी शताब्दी में मासिडोनिया का राजा युवक सिकंदर विश्व की विजय करने चल पड़ा। हिन्दूकुश पहाड़ों की घाटियों से होकर वह अपनी प्रचण्ड सेना को पंजाब तथा सिंधु प्रदेशों में ले आया।

तक्षशिला का राजा अंभि राजा पुरु का शत्रु था। अंभि ने सिकंदर के साथ दोस्ती कर ली! पुरु जेलम और चीनाब नदियों के बीच के प्रदेश का राजा था।

राजा पुरु को जब मालूम हुआ कि अंभि की मदद लेकर सिकंदर उसके देश पर हमला करनेवाला है, तब वह युद्ध के लिए सन्नद्ध हो गया।

एक दिन अचानक वितस्ता नामक जेलम नदी के दोनों किनारों पर दोनों देशों की सेनाओं के बीच टकराहट हुई ।

सिकंदर ने एक उपाय किया । उसने अपनी सेनाओं के अधिक सैनिकों को कई मील दूर ले जाकर नदी को पार कराया और राजा पुरु के शिविर पर हमला बोल दिया ।
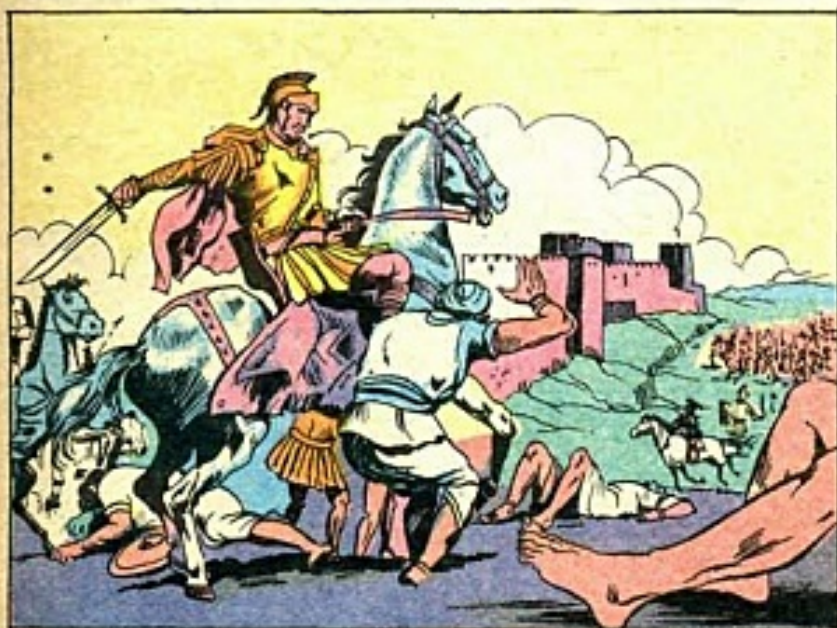
सिकंदर ने राजा पुरु की सेना के हाथियों को न छेड़कर पीछे से उसकी पैदल सेना पर आक्रमण किया । राजा पुरु ने इसकी कल्पना तक न की थी, फिर भी वीरतापूर्वक अपने शिविर की रक्षा करने का प्रयत्न किया ।

भयंकर युद्ध हुआ। अंभि ने सिकंदर को बताया कि गजसेना के साथ कैसे युद्ध करना है। फिर भी सिकंदर राजा पुरु की सेनाओं की हिम्मत को देख विस्मय में आ गया।

राजा पुरु अपनी सेनाओं का आप ही संचालन करता था, फिर भी उसने पीठ न दिखाई। उसकी मुटठी भर सेना ने ग्रीक की विशाल सेना के साथ भयानक युद्ध किया।

राजा पुरु को उसके हितैषियों ने सलाह दी कि वह युद्ध रोक दे। पर पुरु ने उनकी बात न मानी, युद्ध चालू किया। उसके अंग रक्षक एक-एक करके गिरते गये। फिर भी वह युद्ध करता रहा, इसे दूर से सिकंदर ने देखा।

सिकंदर के सेनापतियों ने राजा पुरु को घेरकर जब पकड़ लिया, तब उसके शरीर पर नौ घाव थे। फिर भी वह अंतिम समय तक लड़ता रहा और उसे बन्दी बनानेवालों में से एक को मार डाला।

राजा पुरु के हाथ बांधकर सिकंदर के सामने खड़ा किया गया। सिकंदर ने उससे पूछा—"तुम मुझसे क्या चाहते हो?" पुरु ने झट उत्तर दिया—"एक राजा का दूसरे राजा के साथ जैसा आदर व सम्मान होता है, वही मैं तुमसे चाहता हूँ।"

सिकंदर ने इससे बढ़कर महान साहसी को कहीं नहीं देखा था। लाचार होकर राजा पुरु को मुक्त किया और उसकी मैत्री की कामना की। इसके बाद राजा पुरु ने एक स्वतंत्र राजा के रूप में अपना शासन किया।

रमाबाई धनी औरत है, मगर कंजूस और बातूनी थी। उसका पति स्वर्ग सिधार चुका था। इकलौता लड़का रामभद्र अपनी माँ की प्रकृति के बिलकुल विपरीत स्वभाववाला था। देखने में सुंदर था, लेकिन वह अपनी माँ के विरुद्ध कुछ कहने की हिम्मत नहीं रखता था। रामभद्र के व्यवहार से प्रसन्न हो गाँव के कई लोग उसे अपनी लड़की देने आगे आये; मगर रमाबाई ने पच्चीस हज़ार दहेज मांगा; जो लोग इतनी भारी रक़म दहेज़ में दे न पाये, वे लोग निराश होकर चुप न रहे। बल्कि दूसरे गाँवों से जो रिश्ते आने लगे, उन्हें तोड़ने के लिए रमाबाई के विरुद्ध गलत प्रचार करने लगे।

रमाबाई के मन में भी थोड़ी शंका हुई, बोली—"बेटा, इधर एक भी रिश्ता नहीं आ रहा है। कहीं गाँववाले इन रिश्तों को तो तोड़ नहीं रहे हैं?"

रामभद्र ने कहा—"ज्यादा रक़म दहेज मांगने पर शायद गाँववाले हमारे दुश्मन बन गये हो! अगर वे सब एक हो जाय तो हमारा क्या हाल होगा?"

रमाबाई सोच-समझकर बोली—"तब तो इस बार जो रिश्ता आएगा, उन लोगों से में एक भी पैसा दहेज न मांगूंगी।"

अपनी माँ के इस निर्णय पर रामभद्र बड़ा खुश हुआ।

पड़ोसी गाँव के शिवचरण नामक गृहस्थ के छे लड़कियाँ थीं। सब से छोटी लड़की जानकी बड़ी सुंदर थी। बड़ी पांच लड़कियों की शादियां करने के कारण शिवचरण का हाथ एकदम खाली था।

शिवचरण अपनी कन्या की शादी की चिंता में परेशान था, तभी उसे रमाबाई

रामकुमार

के बेटे के बारे में खबर मिली। उसने रमाबाई तथा रामभद्र को अपनी कन्या देखने के लिए निमंत्रित किया। रामभद्र को जानकी पसंद आई, लड़की को देखने के बाद रमाबाई बोली—"हमें तो दहेज़ बिलकुल नहीं चाहिए।" फिर थोड़ा रुककर बोली—"लेकिन कन्या को पच्चीस गिन्नी सोने के गहने तो देने ही पड़ेंगे।"

पहली बात सुनने पर शिवचरण का चेहरा खिल उठा, मगर दूसरी बात सुनने पर उसका दिल बैठ गया।

"बहन; मैं तो गरीब हूँ, इतना ज्यादा सोना कहाँ से ला सकता हूँ?" शिवचरण ने कहा।

"अजी, मैं यह थोड़े ही कहती हूँ कि सारा सोना लाकर मेरी गोद में भर दीजिए! आखिर आप की कन्या के बदन की ही शोभा बढ़ायेंगे न?" यों कहकर अपने लड़के को साथ ले चल पड़ी।

रामभद्र यह सोचकर निराश हो गया कि जानकी की आशा अब उसे छोड़ना ही पड़ेगा, फिर वह मन ही मन अपनी माँ की निंदा करते उसके पीछे चल पड़ा।

यह बात मालूम होने पर जानकी की सभी बहनों ने अपने पिता को सलाह दी कि उनके गहने जानकी को पहनाकर उसकी शादी कर ले, फिर रमाबाई को जैसे-तैसे समझा-बुझाकर गहने वापस ले ले!

इसके बाद शिवचरण ने रमाबाई के पास खबर भेज दी—"आप की मांग के अनुसार हम गहने देने को तैयार हैं।"

रमाबाई यह सोचकर फूली न समाई कि एक रूपवती बहू सारे बदन में सोने के गहने लादकर उसके घर आनेवाली है।

इसके बाद शादी हो गई। गहने लादकर जानकी ससुराल में चली आई। पर वह गहनों के इस रहस्य को अपने पति से भी बताने को डर गई।

बिना गहनों के ससुराल लौटने पर उनके पति नाराज़ हो जायेंगे। इस कारण जानकी की बड़ी बहनें उसके मायके

लौटने का इंतज़ार करने लगीं। मगर रमाबाई ने जानकी को अपने पीहर न भेजा। इस बीच वह गर्भवती हुई, तब रमाबाई ने अपने समधी को खबर भेज दी कि वह अपनी बहू को समधी के घर प्रसव के वास्ते भेजनेवाली है।

प्रसव का समय निकट आया। जानकी जब अपने मायके जाने को तैयार हुई, तब रमाबाई बोली—"दिन अच्छे नहीं हैं। चोरियाँ बहुत हो रही हैं। तुम्हारे गहने मैं तिजोरी में सुरक्षित रखती हूँ।"

ये बातें सुनने पर जानकी का चेहरा सफ़ेद पड़ गया। अपने गहनों के वास्ते मायके आई हुई जानकी की दीदियों ने बिना गहनों के जानकी को देख कहा—"इस बार अगर हम बिना गहनों के अपने ससुराल लौट जायेंगी तो हमारे पति हमें घर में क़दम रखने न देंगे।"

जानकी के पीछे आये हुए दामाद के हाथ पकड़कर विनती के स्वर में शिवचरण ने सारी बातें सच्ची बता दीं। जानकी ने भी समझाया—"तिजोरी में छिपाये गये गहने लाकर आप न देंगे तो हमारी दीदियों की गृहस्थियाँ एकदम डूब जायेंगी।"

यह समाचार सुनकर रामभद्र चकित रह गया। असली बात प्रकट होने पर उसकी माँ जानकी को घर में क़दम रखने

न देगी। थोड़ी देर तक वह सोचता रहा, "गहने लाकर सौंपने की जिम्मेदारी मेरी है।" यों जानकी को वचन देकर रामभद्र अपने गाँव को लौट गया।

एक दिन वह अपनी माँ से बोला—"माँ, जानकी के बारे में मैंने एक डरावना सपना देखा है। एक बार मैं उसे देख आता हूँ। प्रसव का समय है न?" यों कहकर वह घर से चल पड़ा।

दूसरे दिन रात को अंधेरे के फैलते ही रमाबाई दर्वाजे बंदकर लेट गई।

रात के वक़्त दर्वाजे पर दस्तक हुई। यह सोचकर रमाबाई ने किवाड़ खोल दिया कि उसका बेटा शायद लौट आया है।

पर एक नक़ाबवाला चोर झट से घर के अन्दर घुस आया, छुरी दिखाकर बोला– "चिल्लाओगी तो खबरदार, तिजोरी की चाभियाँ मेरे हाथ दे दो।"

रमाबाई ने कांपते हुए चाभियाँ दे दीं। चोर ने रमाबाई के हाथ-पैर बांध दिये। तिजोरी खोलकर गहने लेकर भाग गया।

थोड़ी देर बाद घर में प्रवेश करते हुए रामभद्र बोला–"माँ, क्या तुमने किवाड़ बंद नहीं किये?" फिर अपनी माँ का हाल देख वह दुखी हुआ और तुरंत उसके बंधन खोल दिये।

"बेटा, किवाड़ पर दस्तक हुई तो मैंने सोचा कि तुम आ गये हो, इसलिए किवाड़ खोल दिया। तब चोर ने अन्दर आकर छुरी दिखाई, तिजोरी लूटकर मुझे यों बांधकर भाग गया है।" रमाबाई ने सर पीटते अपनी कहानी सुनाई।

"आजकल के दिन अच्छे नहीं हैं। दस्तक देनेवाले को पहचाने बिना कहीं कोई किवाड़ खोल देते हैं?" ये शब्द कहते रामभद्र ने तिजोरी के सारे खानों की तलाशी ली। तब बोला–"माँ, अच्छा हुआ, तुम्हारे सारे गहने ज्यों के त्यों हैं। सिर्फ़ जानकी के गहनों की चोरी गई है।"

"माँ, जानकी अपने गहने पहनकर जाती तो कहीं अच्छा होता। अगर हम यह कहे कि सिर्फ़ जानकी के गहने ही चोरी गये हैं, कोई शायद यक़ीन न करेगा।" रामभद्र चिंता का अभिनय करते बोला।

"बेटा, क्या हम कंगाल थोड़े ही हैं। देखते रह जाओ, मैं कल इस वक़्त तक जानकी के वास्ते गहने बनवा देती हूँ। उनके खोने का समाचार हमें किसी पर प्रकट नहीं करना है।" रमाबाई रोष में आकर बोली।

जानकी के एक लड़का पैदा हुआ। बच्चे के नामकरण के दिन रमाबाई ने अपनी बहू के बदन को गहनों से लाद दिया।
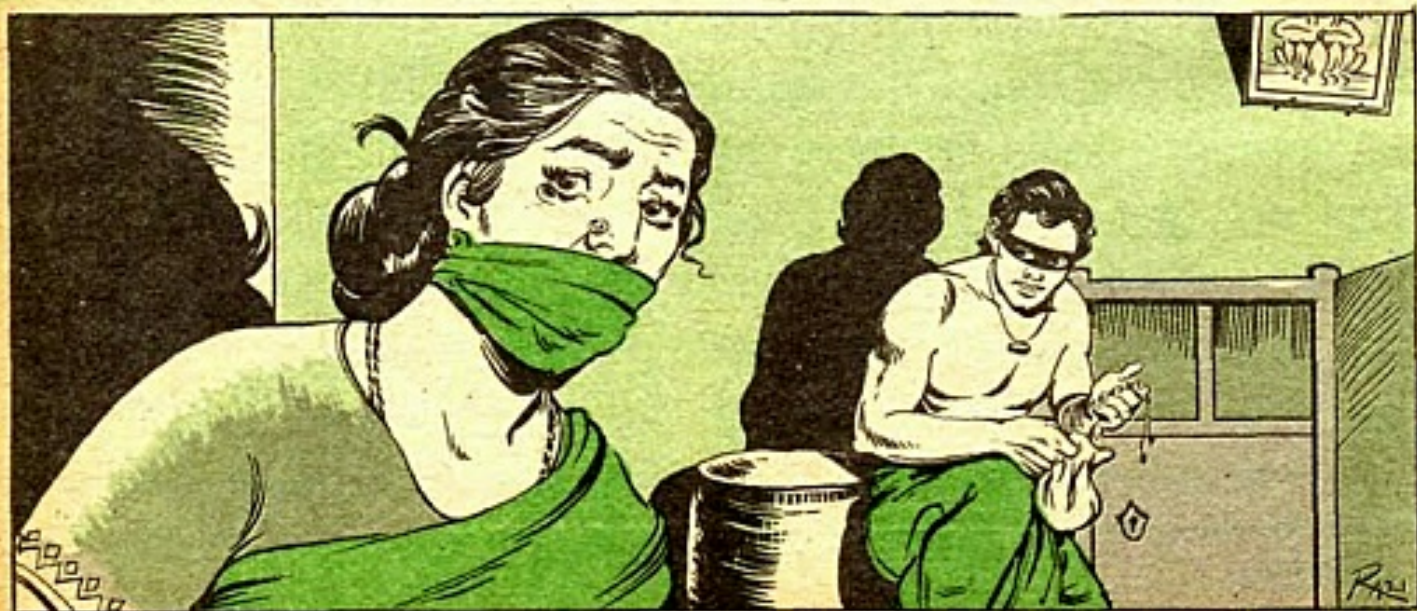
अंध विश्वास

कृष्णसिंह अमीर और शिक्षित भी था। पर उसके भीतर यह अंध विश्वास घर कर गया था कि शुक्रवार के दिन धन ख़र्च करने पर लक्ष्मी ठहरेगी नहीं।

एक बार कृष्णसिंह बीमार पड़ा, रामशास्त्री ने उसका इलाज किया, पर कोई फ़ायदा न रहा। इस पर उसने सलाह दी–"महाशय, यह एक ख़तरनाक जहरीला ज्वर है। आज ही शहर में जाकर इलाज करवा लीजिए, देरी होने से ख़तरा है।"

"आज शुक्रवार है। रुपये कैसे ख़र्च कर सकते हैं?" कृष्णसिंह और उसकी पत्नी ने कहा।

रामशास्त्री को उनकी मूर्खता पर गुस्सा आया, बोला–"मैंने जो इलाज किया इसका मूल्य अभी चुकता कर दीजिए, वरना आप की इज्जत मिट्टी में मिला दूंगा।"

लाचार होकर कृष्णसिंह ने वैद्य रामशास्त्री को रुपये दे दिये, तब यह सोचकर उसी दिन शहर के लिए रवाना हुए कि अब तो व्रत भंग हो ही चुका है, आगे रुपये ख़र्च करने में हर्ज ही क्या है? शहर में इलाज कराया, कृष्णसिंह के प्राण बच गये।

कृष्णसिंह के प्राण बचाने का संतोष रामशास्त्री को प्राप्त हुआ।
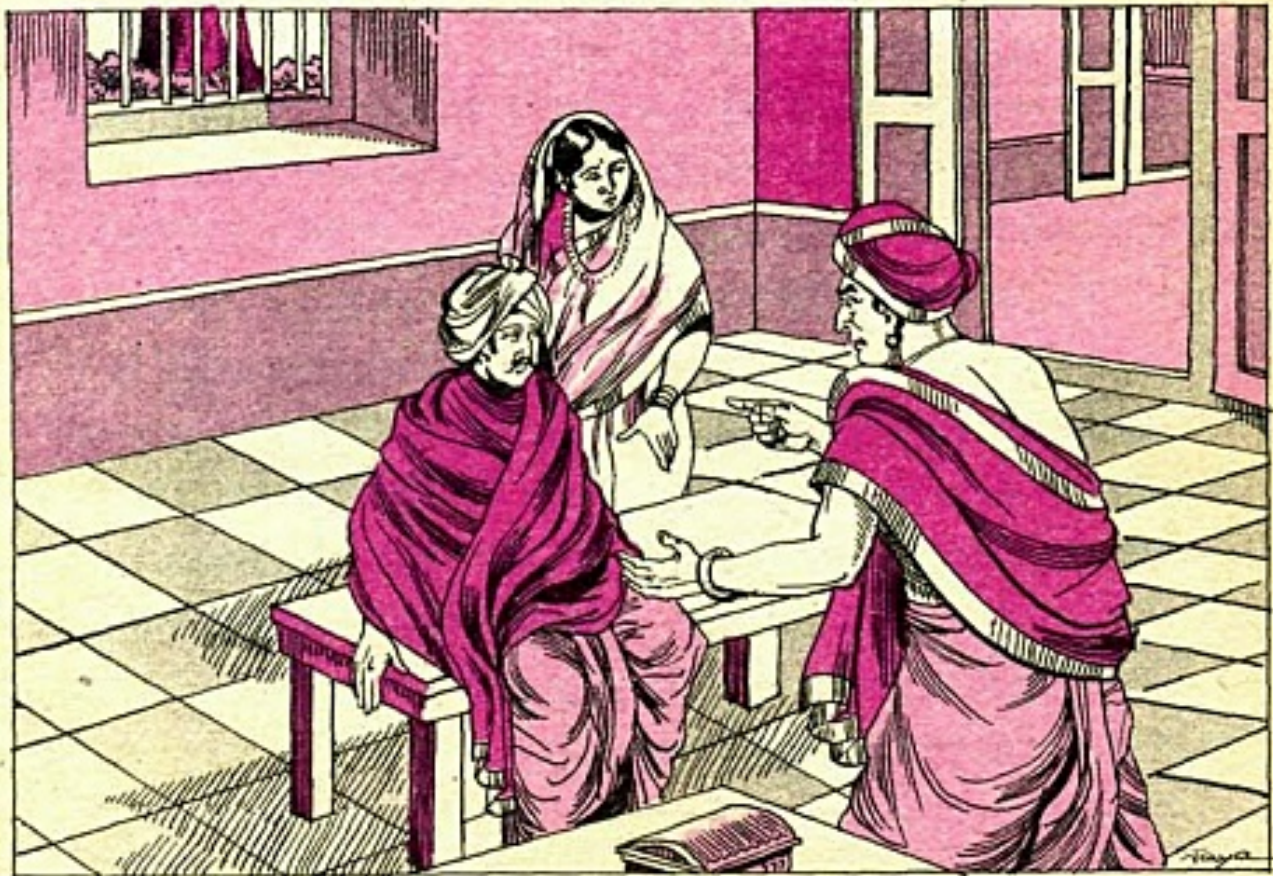
पत्नी है या पिशाच?

गंगराज की शादी हाल ही में हो चुकी थी, उसकी औरत अव्वल दर्जे की आलसी थी। इसलिए पानी भरने से लेकर सारे काम गंगराज खुद किया करता था। वह बासी भात खाकर जब खेत पर जाने को तैयार हो जाता, तब पार्वती नींद से जाग पड़ती, दुपहर तक खेत का काम करके गंगराज कड़ी धूप में जब घर लौटता, तब तक पार्वती रसोई बनाती, खुद खा लेती, बर्तनों पर ढक्कन ढककर सो जाती। गंगराज खुद परोसकर खाना खा लेता, थोड़ी देर आराम करके फिर खेत पर चला जाता। रात को जब वह खेत से लौटता, तब तक पार्वती खाना खाकर पड़ोसिनियों के साथ गपशप करने चली जाती।

वैसे गंगराज के माँ-बाप या निकट के कोई रिश्तेदार न थे, पार्वती सुंदर और अपने माँ-बाप की इकलौती बेटी थी, इसलिए गंगराज को यह रिश्ता पसंद आया और उसने पार्वती के साथ शादी कर ली। इस कारण वह पार्वती को डांटता-डपटता न था। उसका ससुराल रामनगर इतनी दूर था कि पैदल जाने से पाँच दिन लग जाते थे। इसलिए जब-तब आना-जाना भी मुश्किल था।

थोड़े दिन बीत जाने पर पार्वती के माँ-बाप ने उसे अपने घर भेजने की खबर भेज दी। गंगराज अपनी पत्नी को उसके पीहर छोड़ आया। यात्रा में ही आन-जाने में दस दिन लगे, इसके बाद अपने ससुर के अनुरोध पर गंगराज को ससुराल में तीन दिन रहने पड़े। गंगराज ने लौटकर देखा, उसके सारे काम अस्त-व्यस्त पड़े हैं। उन्हें पूरा करने में एक हफ़्ता लग गया।

रजनी बाला

इसके दस दिन बाद गंगराज किसी काम से पड़ोसी गाँव में जाकर लौट रहा था, रास्ते में उसे पार्वती नये संदूक़ के साथ पैदल चले आते दिखाई दी ।

"तुम अकेली क्यों आती हो? तुम्हें यहाँ तक पहुँचाने के लिए कोई साथ नहीं दे सकते थे तो मुझे खबर कर देती?" गंगराज ने अपनी पत्नी से पूछा ।

"मैं तुम्हें छोड़कर रह न सकी । पड़ोसी गाँव तक कोई चला आ रहा था, मैं भी उन लोगों के साथ चली आई ।" पार्वती ने जवाब दिया । इसके बाद दोनों ख़ुशी से बातचीत करते अपने घर पहुँचे ।

पार्वती ने बढ़िया रसोई बनाकर खिलाई, इसके पहले उसकी बनाई रसोई ऐसी स्वादिष्ट कभी न थी । इसलिए गंगराज को आश्चर्य और आनंद भी हुआ ।

दूसरे दिन नींद से जागते ही गंगराज ने देखा, घर की सफ़ाई की गई है, नांदों में पानी भरा हुआ है । दूध गरम किया गया है; वह जब खेत जाने के पहले बासी भात खाने लगा, तब बगल में बैठे पार्वती बातचीत करती रही ।

पार्वती में यह परिवर्तन देख गंगराज फूला न समाया, रोज पार्वती तरह तरह की रसोई बनाकर गंगराज के कामों में भी हाथ बंटाती रही, इस कारण एक हफ़्ते का समय गंगराज के लिए मजे में बीत गया ।

एक दिन आधी रात को अचानक गंगराज की नींद खुल गई । उसने देखा कि पार्वती की चारपाई खाली पड़ी हुई है, उसने अपनी खाट पर बैठे खिड़की में से पिछवाड़े की ओर देखा । चांदनी रात में पार्वती साफ़ दिखाई दे रही थी । लेकिन गंगराज अपनी आँखों पर आप यक़ीन न कर पाया । पार्वती खड़े हो हाथ हिला रही थी, बाल्टी अपने आप कुएँ में जाकर पानी भर लाती और नांदों को भर रही थी । इसके बाद झाड़ू अपने आप सारे पिछवाड़े को साफ़ करने लगा ।

"आप यों कैसे चले आये? क्या सासजी कुशल हैं? आप को देख पार्वती आश्चर्य में आ जाएगी!" गंगराज ने अपने ससुर से कहा।

"क्या बोले? पार्वती आश्चर्य में आ जाएगी? गंगराज, तुम्हारी बातें तो मेरी समझ में नहीं आ रही हैं!" ससुर ने विस्मय में आकर पूछा।

"पहले आप घर तो चलिए, वहीं पर विस्तार से सारी बातें हो सकती हैं।" यों समझाकर अपने ससुर को साथ ले गंगराज अपने घर लौट आया।

उसके दस्तक देते ही पार्वती ने आकर किवाड़ खोले। उसे देखते ही पार्वती का पिता चिल्ला उठा—"बेटी, पार्वती!" फिर वहीं पर सर चकराने से नीचे गिर पड़ा।

उसकी चिल्लाहट सुनकर अड़ोस-पड़ोस के लोग वहाँ पर इकट्ठा हुए।

उसके मुँह पर पानी छिड़काया गया। तब वह होश में आकर बोला—"बेटी, पार्वती! तुमने अपने वचन का पालन किया।"

ये बातें किसी की समझ में न आईं, पर गंगराज का ससुर यह कहते मकान के अंदर आया—"ओह, मेरी बेटी पार्वती, मैंने सोचा था कि तुम मर गई हो।

इस दृश्य को देखने पर डर के मारे गंगराज का शरीर ठण्डा पड़ गया। पार्वती के द्वारा काम पूरा करके लौटने के पहले गंगराज अपनी खाट पर लेट गया और सोने का अभिनय करने लगा। आधी रात के वक़्त ही अपने सारे काम पूरा करके पार्वती ने गंगराज के चेहरे को परखकर देखा, संतुष्ट हो अपनी खाट पर जा लेटी।

खेत से लौटने पर किसी ओझा से पार्वती के बारे में सलाह लेने का गंगराज ने निश्चय कर लिया, मगर उसके खेत में जाते वक़्त ही मेंडों पर चले आते उसका ससुर दीख पड़ा।

पहले मुझे तुम्हें देखना है।" उसके पीछे बाक़ी सभी लोग मकान के अन्दर आ गये।

पार्वती खाट पर बेहोश पड़ी थी। किसी ने उसके मुँह पर पानी छिड़क दिया, तब वह होश में आ गई। अपने चारों तरफ़ खड़े हुए लोगों को देख घबराये हुए स्वर में उसने पूछा–"यहाँ पर मैं कैसे आ गई?"

"बेटी, मैं तुम्हारा पिता शरभदास हूँ।" शरभ ने कहा।

पार्वती ने गंगराज को देख पूछा–"अजी, यह सब क्या है? मुझे तो अनोखा लगता है।"

गंगराज भी चकित हो देखता ही रह गया। इस पर शरभदास बोला–"गंगराज और पार्वती, तुम दोनों घबराओ मत! असली बात मैं बता देता हूँ। तुम जब पार्वती को मेरे घर छोड़कर चले गये, इसके दो दिन बाद मैं तुम्हारी सास और पार्वती भी पड़ोसी गाँव की हाट में गये। लौटते वक़्त मजाक़ में वह जो बातें बता रही थी, उससे हमें लगा कि वह तुम्हें सुख नहीं पहुँचा रही है। उसके इस व्यवहार का खण्डन करते हुए मैंने और तुम्हारी सास ने भी पार्वती को खूब समझाया कि आइंदा ऐसा न करे। जब हम गाँव के श्मशान तक पहुँचे तब पार्वती अचानक किसी दूसरी औरत जैसी बनकर बोली–"बाबूजी! मैं अपने पति को ज़रूर सुख दूँगी।" मैंने पूछा–"बेटी, तुम्हारा
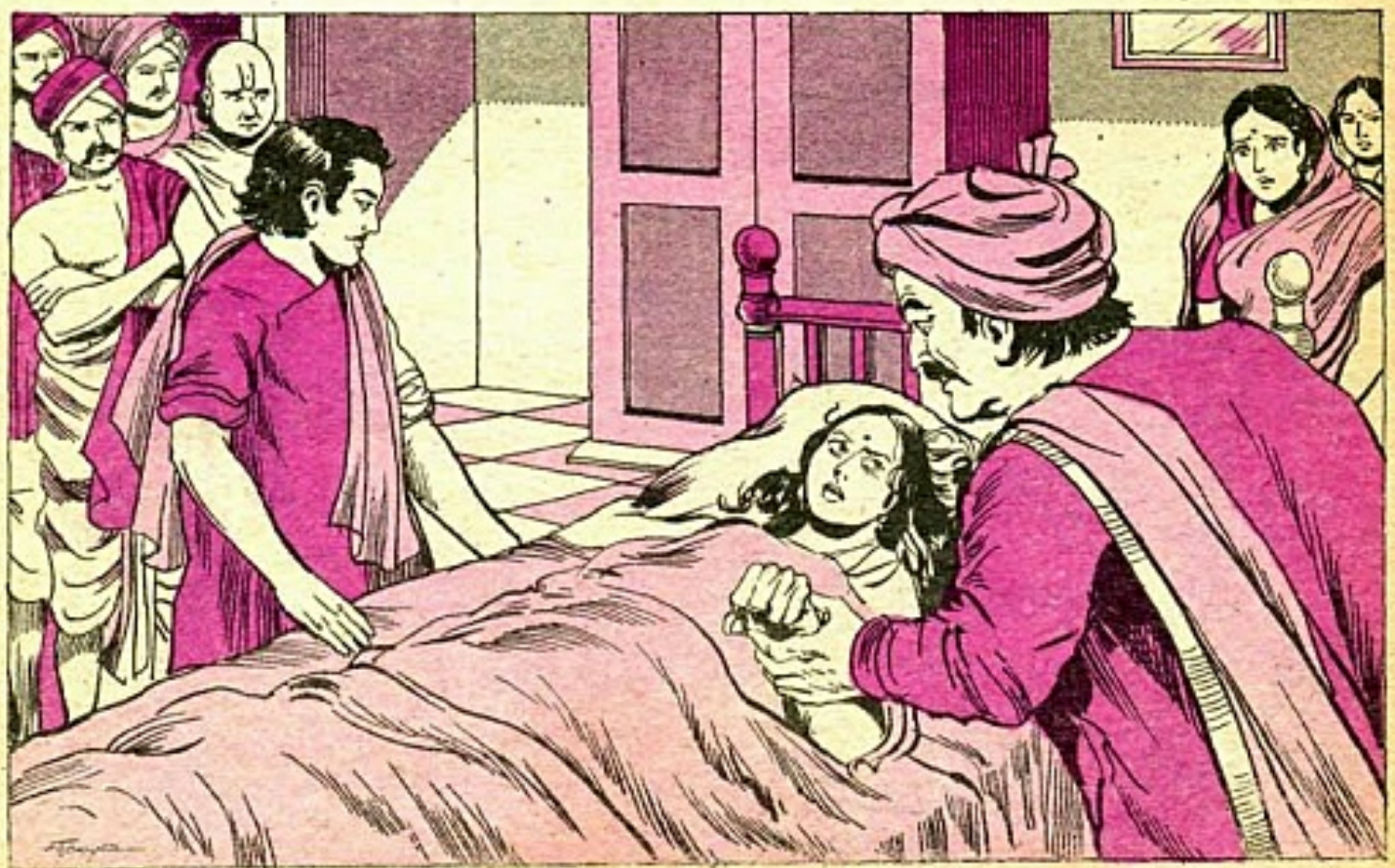
कंठ स्वर क्यों ऐसा बदल गया है?" तब वह बोली–"बाबूजी! मैं बिलकुल बदल गई हूँ।" उसको देखने पर हमें लगा कि उसके भीतर किसी की आत्मा प्रवेश कर गई है। उसकी आँख बचाकर हमने कोई भस्म और रक्षा कवचों का प्रयोग किया। इतने में एक दिन वह अचानक गायब हो गई। हमारे गाँव के बाजू में नदी के किनारे किसी को पार्वती के कपड़े हाथ लगे। हमने सोचा कि वह नदी में डूबकर मर गई है, इसलिए रोये, धोये! यह खबर आज तक तुम्हें देने में हमने संकोच किया, आखिर यह अशुभ समाचार तुम्हें देने के लिए ही मैं घर से चल पड़ा।"

"बाबूजी! क्या ये सारी बातें सच हैं?" पार्वती ने आश्चर्य में आकर पूछा।

इसके उत्तर में गंगराज बोला–"हाँ सच है! मुझे भी असली बात कल ही मालूम हो गई। मैं यह साबित कराना चाहता था कि वह सच है या नहीं, तुम्हारे पिताजी दिखाई दिये। तुम्हारे पिताजी को देखते ही तुम्हारे भीतर जो कामिनी पिशाच प्रवेश कर गई थी, वह भाग गई होगी! वह पिशाच अपने पति को सुखी बनाने के अपने वचन का पालन करने आई होगी। तुम्हारे माँ-बाप ने यही सोचा था कि तुम्हारे अन्दर कोई और आत्मा प्रवेश कर गई है, इसलिए तुम उनसे कहे बगैर अकेली चली आई हो। तुम्हारे मर जाने की अफ़वाह उड़ाने के लिए उसी ने शायद तुम्हारे वस्त्रों को नदी के किनारे रखा होगा। उसका उद्देश्य शाश्वत रूप से तुम्हारे साथ रहने का होगा।"

इसके बाद उसने एकांत में पार्वती से कहा–"तुम से वह पिशाच ही कहीं भली थी। जानती हो, उसने मेरी कैसी सेवा की है?" इन शब्दों के साथ गंगराज ने पार्वती को सारा वृत्तांत सुनाया।

उस वक़्त से पार्वती ने उस पिशाच की अपेक्षा कहीं अच्छे ढ़ंग से अपने पति की सेवा करने का प्रयत्न किया।

पद्मावती

सिंहल देश के राजा बृहद्दत के पद्मावती नामक एक पुत्री थी। वह बचपन से ही शिवजी की आराधना किया करती थी।

एक बार शिवजी ने उसे दर्शन देकर बताया—"विष्णु के अंशवाला व्यक्ति तुम्हारा पति बनेगा! ऐसा न होकर अन्य लोग अगर तुम्हारे साथ शादी करने की कामना से आयेंगे तो स्त्रियाँ बन जायेंगे।"

पद्मावती ने यह बात किसी से नहीं बताई। कई साल बीत गये। पद्मावती युवत वयस्का हो गई। उसके पिता ने उसके स्वयंवर का प्रबंध किया और इसका ढिंढोरा भी पिटवाया।

कई देशों के राजा पद्मावती के साथ विवाह करने के ख्याल से स्वयंवर में आये, मगर ज्यों ही पद्मावती उनके बीच आई, त्यों ही वे सब स्त्रियों के रूप में बदल गये।

इस प्रकार शिवजी ने पद्मावती के प्रति जो बात कही थी, वह आधी तो सत्य साबित हो गई, पर पूर्ण रूप से नहीं, उसके पति बनने योग्य व्यक्ति स्वयंवर में आये हुए व्यक्तियों में न था।

पद्मावती के पिता ने दो-तीन बार उसके स्वयंवर का प्रबंध किया, पर स्वयंवर में आये हुए सभी लोग नारियों के रूप में बदलते गये।

पद्मावती को अब यह मानसिक व्यथा सताने लगी कि उसकी शादी कभी होने की नहीं; एक दिन वह उद्यान में बैठी हुई थी, तब एक तोता कहीं से उड़ता हुआ आया और मनुष्यों की बोली में कहा—"राजकुमारी, तुम चिंता क्यों करती हो? तुम्हारे पति बनने योग्य मन्मथ की आकृतिवाला एक युवक है। मैं उसको तुम्हारे पास ले आता हूँ।"

दिनेश ठाकुर

तोते के मुँह से ये शब्द सुनने पर पद्मावती के मन में आशा जगी। तब उसे यह विश्वास हो गया कि शिवजी ने उससे जो बात कही थी, उसका शेष आधा अंश भी पूरा होने जा रहा है।

पर वह तोता कौन है?

कंबळपुर में विष्णुयश तथा सुमति नामक दंपति रहा करते थे। उनके कल्कि नामक एक पुत्र पैदा हुआ। उसने परशुराम के यहाँ सारी विद्याएँ सीख लीं। वह भी पद्मावती जैसे शिवभक्त था।

उसकी भक्ति पर प्रसन्न हो शिवजी ने उसे दर्शन दिये, साथ ही उसे एक खड्ग, एक घोड़ा और एक तोता भी दे दिया।

वही तोता संयोग से सिंहल में गया। चिंतामग्न हो उद्यान में बैठी पद्मावती से मिला। उसे कल्कि का वृत्तांत सुनाया, फिर कल्कि के पास लौटकर उसे समझाया— "राजकुमार, सिंहल राजा की पुत्री पद्मावती है, उससे बढ़कर सुदर कन्या तुम्हें पत्नी के रूप में प्राप्त होनेवाली नहीं है।"

इस पर कल्कि पद्मावती को देखे बिना ही उस पर मोहित हो उठा। फिर सिंहल के लिए चल पड़ा, उद्यान में स्नान करने आई हुई पद्मावती से मुलाक़ात की।

पद्मावती के देखने पर भी वह युवक स्त्री के रूप में नहीं बदला, इस कारण उसने सोचा कि भाग्य ने उसी को अपने पति के रूप में निर्णय किया है, तब उसके साथ विवाह करने की अपनी इच्छा अपने पिता को बताई।

राजा भी तो यही चाहते थे, फिर क्या था, पद्मावती और कल्कि का वैभवपूर्वक विवाह हुआ। उस शुभ अवसर पर स्त्रियों के रूप में परिवर्तित सभी राजकुमारों ने कल्कि से निवेदन किया कि उन्हें उनके पूर्व रूप दिलावें। कल्कि ने उन्हें सलाह दी कि रेवा नदी में स्नान करें। वे सब रेवा में स्नान करके पुन: पुरुष बन गये।

कल्कि और कोई नहीं, बल्कि कलि का निर्मूल करने पैदा हुआ विष्णु का अवतार ही था।

देवी भागवत
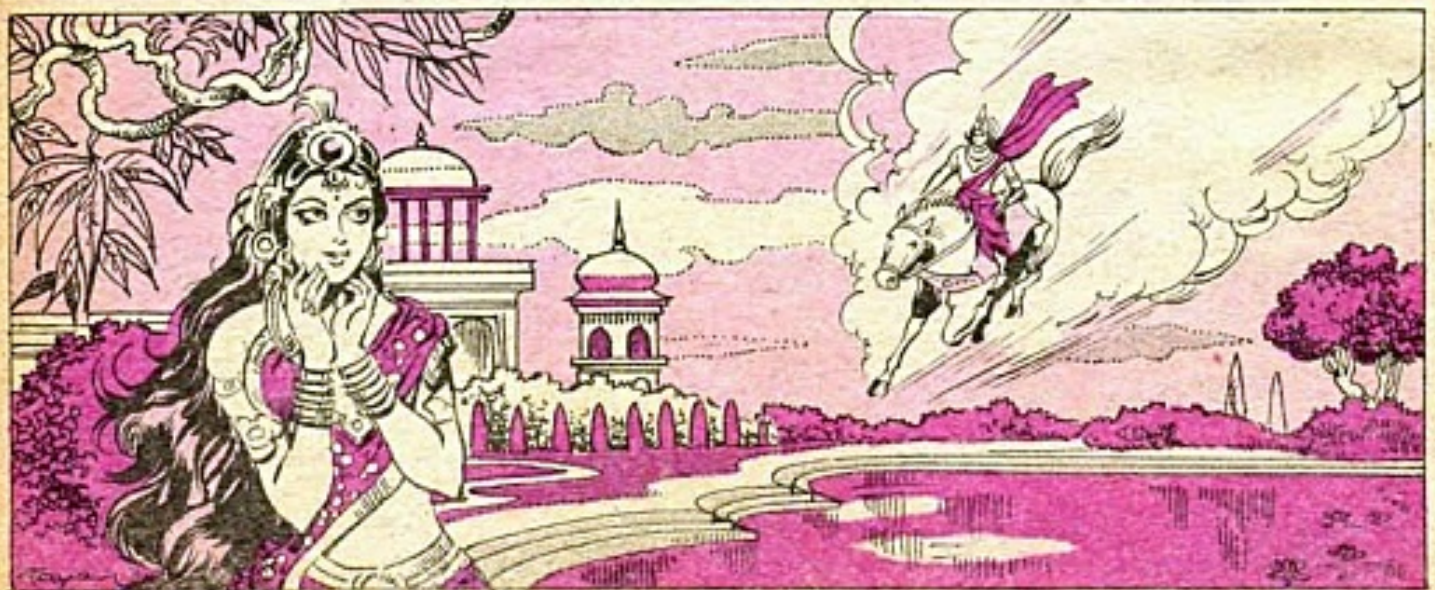
हैहय वंश में जन्म धारण करनेवाला कार्तवीर्य असाधारण शौर्य और पराक्रम रखता था। वह एक हज़ार हाथोंवाला था। असंख्य यज्ञ करके उदारतापूर्वक दान-दक्षिणाएँ दिया करता था। उसका गुरु दत्तात्रेय था। उसके पुरोहित भृगु थे, इस कारण कार्तवीर्य के द्वारा किये गये यज्ञों में दक्षिणाएँ लेकर भृगु भी अपार धनी हो गये।

कार्तवीर्य की मृत्यु के बाद उसके वंशज हैहय दरिद्र बन गये और उन लोगों ने अपने गुरु भृगों की याचना की। लेकिन भृगु हैहयों को अपना धन देना नहीं चाहते थे। इसलिए जहाँ-तहाँ धन गाड़कर पहाड़ी गुफ़ाओं में छिप गये।

हैहयों ने आकर ढूँढा, ब्राह्मणों के सारे घर निर्जन पड़े थे। उनके घर खोदकर देखा तो अपार संपत्ति बाहर निकली। इस पर नाराज़ हो हैहयों ने पहाड़ों में छिपे सभी भृगों को मार डाला। उनकी गर्भवती नारियों के गर्भों को अस्त्र-शस्त्रों से चुभोकर सताया।

यह भयंकर हिंसाकाण्ड उस प्रदेश के तीर्थों में स्थित मुनियों से देखा न गया, वे हैहयों से बोले–"तुम लोग अपनी यह दुष्टता छोड़ दो! क्या इस प्रकार ब्राह्मण जाति का निर्मूल करना उचित है? क्या औरतों के गर्भ भी छेदे जाते हैं? ये कार्य राजाओं के लिए उचित हैं? तुम लोगों के इस पाप का कोई प्रतीकार न होगा?"

२०. लक्ष्मीदेवी को शाप

इस पर हैहयों ने बताया–"आप लोग तो महात्मा हैं, लेकिन इन लोगों ने हमारे पूर्वजों के यहाँ अपार धन लेकर छिपा रखा है। ये लोग चोर हैं! क्या चोरों का वध करना पाप है? क्या कार्तवीर्य ने इन्हें इसलिए धन दिया था कि उसे गाड़कर रख दे? कहिये! यज्ञ कराकर ब्राह्मण जो धन कमाते हैं, उसका उन्हें भोग करना चाहिए! या निर्धनों में बांटना है! वरना वह धन राजा, चोर या अग्नि के वशीभूत हो जाएगा! ऐसा न होकर जो व्यक्ति धन छिपाता है, वह मरने पर अवश्य नरक में चला जाता है। हमने अपने पुरोहित इन भृगुओं से कर्ज मांगा। ऐसे नीच व्यक्तियों को दण्ड देना क्या अपराध है?" यों समझाकर मुनियों को मनवाया और वे लोग भृगु वंशी नारियों के गर्भों का नाश करने लगे।

इस पर वे सारी नारियाँ डरकर हिमालयों में भाग गईं। धन का लोभ मानवों के द्वारा सब तरह के काम कराता है। उससे बढ़कर कोई दूसरा शत्रु नहीं है। यह लोभ, काम, क्रोध और अहंकार से बढ़कर होता है! धन के लोभ में पड़कर लोभी अपने प्राण तक त्यागने को तैयार हो जाता है।

हिमालयों में जाने के बाद भृगु नारियों ने मिट्टी से गौरी की प्रतिमा बनायी, नदी के किनारे उसकी प्रतिष्ठा करके उसकी पूजा करते हुए मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगीं।

एक दिन रात को उन्हें देवी ने सुंदर अवतार में सपने में दर्शन देकर कहा– "तुम लोगों में से एक औरत की जांघ में से मेरे अंश में एक पुत्र पैदा होगा। वह तुम लोगों की रक्षा करेगा!" इस पर नींद से जागकर भृगु नारियाँ बहुत आनंदित हुईं।

उनमें से एक नारी अपनी जांघ में गर्भ धारण कर चुकी थी। उसकी जांघ में से एक पुत्र पैदा हुआ। वह सूर्य जैसा

तेजोवान था। उस समय उन भृगु नारियों की खोज करते जो क्षत्रिय आये, उनके द्वारा उस बच्चे को देखते ही उनकी आँखें जाती रहीं।

हैहय यह सोचकर डर गये कि यह सब ब्राह्मण का प्रभाव है। उस नारी की शरण मांगते बोले–"माईजी, आप को देखते ही हम अंधे हो गये हैं। हम लोग आप की महिमा नहीं जानते, कृपया हम पर अनुग्रह करके हमें फिर से दृष्टि दिलाइये! इस अंधेपन से कहीं मौत अच्छी है। आइंदा हम कभी ऐसे दुष्ट कार्य नहीं करेंगे और भृगुवंशियों के प्रति कृतज्ञ रहेंगे। हमने मूर्खतावश जो अपराध किया है, उसे क्षमा करके हमें नेत्र दान कर दीजिए! आप और आप के पुत्र सुखपूर्वक रह सकते हैं।"

वह ब्राह्मण नारी हैहय वंशियों की बातें सुन विस्मय में आकर बोली–"मैं नहीं जानती कि आप लोग क्यों अंधे हो गये? मेरे पुत्र ने आप लोगों को यों अंधा बना दिया है, आप लोग दुष्ट हैं, धन के वास्ते हत्याकांड करने पर उसका फल भोगना ही होगा। आप लोगों ने गर्भस्थ पिंडों, शिशुओं तथा वृद्धों तक का ख्याल किये बिना उनका वध किया है! इसलिए आप का दमन करने के लिए ही यह बालक पैदा हुआ है। जगदंबा की कृपा से यह मेरी जांघ में से पैदा हुआ है। अपने पिताओं की मृत्यु पर यह आप लोगों से

बहुत नाराज है। इसलिए इस बालक से विनती करके इसको शांत कीजिए! तभी आप को फिर से दृष्टि प्राप्त हो जाएगी!"

जांघ (ऊरु) से पैदा होने के कारण उस बालक का नाम और्यु पड़ गया। हैहयों ने उससे विनती की। और्यु ने शांत होकर उनसे कहा–"देवीजी का निर्णय बदल नहीं सकता। उनकी इच्छा के अनुसार जो कार्य संपन्न होते हैं, उनके बारे में कोई ज्ञानी व्यक्ति चिंता नहीं करता। आइंदा ऋषियों को कष्ट न पहुँचाइये, जाइये।"

इसके बाद हैहय वंशियों को पुनः दृष्टि प्राप्त हो गई। और्यु का पालन-पोषण आश्रम में ही उसकी माँ करती रही।

भरत वंश का मूल पुरुष भरत है। यादव वंश का मूल पुरुष यदु है। इसी प्रकार हैहय वंश के संबंध में भी एक कहानी है। सूर्य का एक पुत्र रेवंत था। वह एक बार उच्चैःश्रव नामक घोड़े पर सवार हो विष्णु को देखने वैकुंठ में चला गया। लक्ष्मी अपने भाई (समुद्र के मंथन के समय अपने साथ उत्पन्न) उच्चैःश्रव तथा उस पर सवार एक सुंदर युवक को देख सम्मोहित हो देखती रह गई।

"तीनों लोकों में असाधारण रूपवान एक युवक घोड़े पर सवार हो यहीं आ रहा है। क्या उसे तुम जानती हो?" विष्णु ने लक्ष्मी से पूछा।

मगर लक्ष्मी रेवंत की सुंदरता पर पहले ही सम्मोहित थीं। इसलिए उन्हें अपने पति का यह प्रश्न सुनाई नहीं दिया। विष्णु ने लक्ष्मी की मानसिक स्थिति को भांप लिया और क्रोध में आकर शाप दे दिया–"तुम यों देखती क्या हो? उस घोड़े को देखने पर तुम्हारा मन रम गया है, तुम रति और रमा कहलाते हुए चंचल चित्ता हो अपयश प्राप्त करो। भूलोक में एक घोड़ी के रूप में जन्म धारण कर लो।"

यह शाप सुनकर लक्ष्मीदेवी घबरा गई, रोते हुए विष्णु के चरणों पर गिरकर

बिनती करने लगी–"आप यों निर्दयी बनकर मुझे शाप देते हैं? इस क्षणिक चंचलता को देख आप का मुझ पर जो स्वाभाविक प्रेम था, क्या वह जाता रहा? आप का हृदय नवनीत के समान कोमल है। आप ने कभी शाप नहीं दिया, ऐसी हालत में आज अचानक क्यों आप का हृदय बदल गया है? आप से मुझे अलग होना पड़ा तो मैं इसी वक्त अपने प्राण दे दूंगी। कृपया मुझे शाप से मुक्त होने का उपाय बता दीजिए।"

इस पर विष्णु का मन पिघल गया। उन्होंने लक्ष्मी को समझाया–"तुम्हारे गर्भ में मेरी आकृति के पुत्र के पैदा होते ही तुम शाप से मुक्त हो जाओगी और मेरे पास लौट आओगी।"

रेवंत ने भी भांप लिया कि विष्णु नाराज़ हैं, झट से प्रणाम किया, विदा लेकर अपने पिता के पास लौट आया और सारा वृत्तांत उन्हें सुनाया।

लक्ष्मी भी अपने पति से विदा लेकर सुवर्णाक्ष नामक स्थान पर पहुँचीं, घोड़ी के रूप में शिवजी के प्रति तपस्या करने लगी।

उनकी तपस्या पर प्रसन्न हो शिवजी पार्वती के साथ वृषभ वाहन पर सवार हुए प्रमथ गणों के साथ पहुँचकर बोले–"माई, मेरे प्रति आप क्यों तपस्या कर रही हैं? समस्त को प्रदान करनेवाले भगवान विष्णु हैं न? विवेकशीला नारी के लिए पति से बढ़कर कोई बड़ा देवता हो सकता है? आप के पतिदेव तो साधारण व्यक्ति नहीं हैं न?"

"यह सब सही है। पर बात यह है कि मेरे पतिदेव ने ही मुझे शाप दे दिया है; उसका विमोचन आप की कृपा से होगा, यही विचार करके मैं आप के प्रति तपस्या करती हूँ। कहा गया है कि मेरे गर्भ से एक पुत्र होने पर मेरा शाप जाता रहेगा। पर कैसे पुत्र पैदा होगा? कृपया बता दीजिए। मेरे पति तो कहीं वैकुण्ठ में हैं। मैं यहाँ पर एक जंगल में हूँ। हमें संतान

कैसे पैदा होगी? मेरी तपस्या पर आप सचमुच प्रसन्न हैं, तो मेरी इच्छा की पूर्ति कर दीजिए! आप के और मेरे पति के बीच कोई अंतर नहीं है। आप की कामना करने पर उनकी कामना करने के बराबर हैं। इसलिए आप कृपया कोई ऐसा उपाय कीजिए जिससे मेरे पति किसी प्रकार से आकर मुझ से मिले!" घोड़ी के रूप में स्थित लक्ष्मी ने कहा।

इस पर शिवजी बोले–"आप चिंता न कीजिए! आप के पति घोड़े के रूप में आप के पास आयेंगे। आप के एक पुत्र होगा! जो सारे विश्व पर शासन करेगा! उसका नाम एकवीर पड़ेगा। उसी के द्वारा हैहय वंश का आरंभ होगा। इसके बाद आप और आप के पति वैकुण्ठ में जाकर सुखपूर्वक रहिए! आप को इस तरह यातनाएँ भोगने का कारण पर शक्ति को पहचानकर उसकी आराधना न करना ही है।" इसके बाद शिवजी ने कैलास में पहुँचकर चित्र रूप नामक एक प्रमथ को आदेश दिया–"तुम वैकुण्ठ में जाकर भगवान विष्णु से बता दो कि वे अपनी पत्नी के दुख को दूर करे। यह भी बता दो कि मैंने ये शब्द अत्यंत स्नेहपूर्वक बताये हैं।"

इस पर चित्ररूप वैकुण्ठ में पहुँचा, विष्णु के द्वारपाल जय-विजयों से अपने आने का समाचार विष्णु को देने को कहा।

जय ने भीतर जाकर विष्णु से बताया–"भगवन, शिवजी का दूत चित्ररूप आया हुआ है। क्या मैं उसे अन्दर भेज सकता हूँ?" विष्णु ने उसे तुरंत भीतर भेजने की आज्ञा दी।

चित्ररूप ने भीतर प्रवेश करके विष्णु को प्रणाम किया, कुशल समाचार के बाद निवेदन किया–"भगवान, शिवजी ने मेरे द्वारा आप के पास यह संदेशा भेजा है–"आप की पत्नी लक्ष्मी घोड़ी के रूप में कालिंदी और तमसा नदियों के संगम के पास ध्यान निष्ठा में हैं।

लक्ष्मीजी की सारे देवता पूजा करते हैं। उनके अनुग्रह से वंचित होकर कोई भी मानव सुखी नहीं रह सकता। ऐसी पत्नी से दूर कर आप भी कैसे सुखी रह सकते हैं? साधारण गृहस्थ भी अपनी पत्नी से दूर नहीं रह सकता। मेरी बात मानकर आप लक्ष्मी को सांत्वना देकर स्वीकार कर लीजिए। दक्षयज्ञ के समय मैं जब अपनी पत्नी से वंचित रह गया तभी मुझे पत्नी के वियोग के दुख का अनुभव हुआ। इसलिए चाहे किसी को भी पत्नी का वियोग हो जाय तो मेरे दिल को बड़ा कष्ट पहुँचता है। आप अपनी पत्नी से बहुत दिनों से दूर रहे हैं। इस बीच आप ने क्या सुख भोगा? इसलिए कृपया आप इसी वक़्त घोड़े के रूप में अपनी पत्नी के पास चले जाइये।"

यह संदेशा सुनकर विष्णु घोड़े के रूप में लक्ष्मी के पास पहुंचे। दोनों के एक पुत्र हुआ। विष्णु ने लक्ष्मी से कहा–"हम वैकुण्ठ को लौट जायेंगे। हमारे इस पुत्र को यहीं पर छोड़ देंगे। तुम घोड़ी का यह रूप छोड़ दो।"

"कोई भी नारी क्या अपने गर्भ से उत्पन्न शिशु को छोड़ने के लिए तैयार हो जाएगी? इस नदी के तट पर इस छोटे से शिशु की रक्षा कौन करेंगे?" यों लक्ष्मीदेवी कह ही रही थीं कि तभी उन्हें दिव्य शरीर प्राप्त हो गये। उनके वास्ते विमान भी आ पहुँचा।

लक्ष्मी अपने पुत्र को गोद में लेकर बोलीं–"यह शिशु तो सब तरह से आप ही के जैसा है। मैं इसे छोड़ नहीं सकती। हम तीनों जायेंगे।"

"इस शिशु के द्वारा एक कार्य संपन्न होना है! ययाति के तुर्वस नामक एक पुत्र है, वह संतान के वास्ते तप कर रहा है। मैं इसका प्रबंध करूँगा कि वह इस शिशु का पालन-पोषण करे। तुर्वस के यहाँ पहुँचने तक इस शिशु को कोई कष्ट न होगा।" यों लक्ष्मीदेवी को समझाकर उनको साथ ले विष्णु वैकुण्ठ में चले गये।

दुश्मनी

रमा और शांता अड़ोस-पड़ोस की औरतें थीं। दोनों के बीच बहुत दिनों से गहरी दोस्ती थी, लेकिन किसी कारण अचानक दोनों के बीच दुश्मनी पैदा हो गई। उनके झगड़े सारे मुहल्ले के लिए विनोद के कारण बन गये थे। मगर उनके पतियों के लिए बड़े ही अपमान के कारण बन गये।

अपनी पत्नियों की इस दुश्मनी को दूर करने का उनके पतियों ने एक उपाय किया। रमा का पति एक पिल्ला पकड़ लाया, तो शांता का पति एक बिल्ली का बच्चा। दोनों उन्हें पालने लगे।

थोड़े दिन तक वे एक दूसरे को देख गुस्से में आकर गुर्राते देख लोग खुश हो जाते थे। दोनों पड़ोसियों ने धीरे धीरे बिल्ली और पिल्ले को एक ही थाल में खाने की आदत डाल दी। मगर देखते-देखते उन जानवरों ने एक-दूसरे पर गुस्सा करना बंद किया। जल्द ही दोनों परस्पर खेलने भी लगे।

रमा और शांता ने सुना कि लोग ऊँची आवाज में कह रहे हैं–"मनुष्यों की अपेक्षा ये जानवर कहीं उत्तम हैं।" तब दोनों ने आपस में लड़ना छोड़ फिर से दोस्ती कर ली।

अनाथ बच्चा

श्याम अपनी माँ की बात बिलकुल नहीं मानता था। वह आवारा गर्दी करते नटखट के काम करता था। पैसे बेकार खर्च करता था। उसके भविष्य के बारे में उसकी माँ बहुत परेशान रहती थी।

एक बार श्याम ने किसी बुजुर्ग के साथ झगड़ा मोल लिया और उसने बुरा-भला कह दिया। वह बुजुर्ग श्याम को पीटने के लिए तैयार हो गया। पर ऐन मौक़े पर उसकी माँ आ पहुँची, बीच-बचाव करके अपने लड़के को घर ले गई। घर पहुँचने पर श्याम को डांटा—"बेटा, तुम बड़ों से क्यों झगड़े मोल लेते हो?"

श्याम ने बताया—"माँ, उस बुजुर्ग ने मेरे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया, मेरी बेइज्जती की।"

"बेटा, हमारे पास धन नहीं है। धनी लोग हम जैसे लोगों को डांटे, हमारी निंदा करे, हमारी बेइज़्जती करे, फिर भी हमें सहन करना होगा।" माँ ने समझाया।

यह सलाह श्याम को अच्छी न लगी। उसने पूछा—"मान लो; हम सहन न करेंगे, तो क्या होगा?"

"पेट भरने को खाना तक न मिलेगा।" माँ ने कहा।

"अगर मैं बुजुर्गों से लड़ पड़ूँ तो क्या तुम भी मुझे खाना न खिलाओगी?" श्याम ने अपनी माँ से पूछा।

माँ ने उसे अपनी छाती से लगाया; आँखों में आँसू भर कर कहा—"बेटा, मैं तुम्हें खाना क्यों नहीं खिलाऊँगी? लेकिन हमेशा के लिए तो मैं ज़िंदा नहीं रह सकती हूँ न? यही चिंता मुझे सताती है।"

इस पर श्याम को लगा कि उसे भी बड़ा आदमी बनना है। उस दिन से लेकर वह एक गुरु के पास पहुँचा और

गीता नारायण

बड़ी लगन के साथ विद्याभ्यास करने लगा। फिर भी अगर उसे कोई नाहक़ छेड़ता तो वह ईंट का जवाब पत्थर से दिया करता था।

बदक़िस्मती से श्याम की शिक्षा पूरी होने के पहले ही उसकी माँ मर गई।

श्याम को उसके गुरु ने समझाया— "श्याम, तुम पढ़ने-लिखने में तेज हो, जैसे-तैसे दो साल मेहनत करोगे तो तुम्हारी पढ़ाई पूरी हो जाएगी। इसलिए तुम रोज एक गृहस्थ के घर में खाने का इंतज़ाम करके अपनी पढ़ाई पूरी कर लो।"

इस तरह श्याम ने घर-घर में खाना खाते अपनी पढ़ाई चालू रखी। उन घरों में श्याम को कई काम करने पड़ते थे। सारे काम सही ढंग से करने पर भी कोई न कोई बहाना करके हमेशा उसे गालियाँ सुनाते थे।

एक घर में श्याम पौधों को पानी सींच रहा था, उसके घरवाले कहने लगे— "अरे, सुनो, पौधों को ज्यादा पानी देने से वे सड़ जायेंगे।" कम पानी देता तो शिकायत करते—"अबे, थोड़ा पानी दोगे तो पौधा सूख न जाएगा?"

इस प्रकार श्याम जो भी काम करता, शिकायत करते, फिर भी वह ये सारी बातें सहन कर चुप रह जाता था। धीरे धीरे वह अपनी सहनशीलता के कारण सारे गाँव के लोगों की प्रशंसा प्राप्त कर सका।

उसी गाँव में एक मोतबरी किसान का पुत्र था। उसका नाम राम था जो श्याम की ही उम्र का था। मगर वह किसी की धौंस सहता न था, सब को कड़ा उत्तर सुना देता था।

एक दिन राम की माँ उसकी चेष्टाओं से खीझकर बोली—"बेटा, तुम श्याम से सबक़ क्यों नहीं सीख लेते? वह कितनी तक़लीफ़ें उठाकर पढ़ता है।"

इसकी सचाई की जांच करने के विचार से राम श्याम के व्यवहारों पर निगरानी रखने लगा। एक घर में श्याम ने रोनेवाली लड़की को गोद में न लिया, इसलिए उस पर डांट पड़ी, दूसरे घर में रोनेवाली लड़की को गोद में ले खिलाने लगा तो यह कहकर डांटने लगे कि तुम बच्ची को नाहक़ हमेशा गोद में ले फिरा करते हो, उसे खेलने नहीं देते। यों हर घर में किसी न किसी बात को लेकर गालियाँ सुनाते थे और वह उन गालियों को चुपचाप सहन कर लेता था।

एक दिन राम ने श्याम से पूछा—"श्याम, तुम्हारी सहनशीलता अद्‌भुत है। ये सारे अपमान तुम कैसे सहन कर पाते हो?"

"मुझे लोग डांटते हैं तो क्या हुआ? उनका दिल तो अमृत के समान है। वे लोग-रोज मुझे भर पेट खाना खिलाते हैं। मेरे प्रति बड़ा प्रेम रखते हैं।" श्याम ने जवाब दिया।

"मुट्ठी भर-खाने के वास्ते गालियाँ सहन करना कैसे मुमक़िन है?" राम ने आश्चर्य में आकर पूछा।

"मेरी माँ जब तक ज़िंदा रही, तब तक मेरे लिए भी यह मुमक़िन न था।" श्याम ने उत्तर दिया। तब जाकर असली बात राम की समझ में आ गई। माँ बेटे के लिए बड़ा सहारा है। कोई भी गाली दे तो वह बेटे का आदर करती है। अनाथ बच्चे में अगर सहनशीलता न रहे तो कौन उसे आश्रय देगा?"

उस दिन से राम अपनी माँ की बात मानते सहनशीलता की ज़िंदगी जीने लगा।

अनोखी आदत

कल्याणसिंह न केवल कंजूस था, बल्कि वह मानव द्वेषी भी था। इसलिए उसके कार्यों के द्वारा अगर किसी को कोई नुक़सान पहुँचता तो वह बड़ा खुश होता।

वह आधी रात के वक्त रोज दो-तीन बार जाग पड़ता, तिजोरी खोलकर जांच कर लेता कि उसकी संपत्ति सुरक्षित है या नहीं, फिर उसके किवाड़ों के द्वारा बड़ी ध्वनि पैदा कर अड़ोस-पड़ोसवालों की नींद में खलल डालता।

अड़ोस-पड़ोसवाले शिकायत करते—"तुम्हारी वजह से रात भर हम जागते रहें, हमारी नींद खराब हो गई।" तो वह अंदर ही अंदर खुश होते कहता—"भाई, क्या करूँ? तिजोरी का किवाड़ कस गया था, इसलिए ऐसी आवाज होती है।"

कल्याणसिंह के पड़ोस में एक रिश्तेदार आया, वह रात भर जागता रहा, उसने कल्याणसिंह के बारे में सारी बातें जानकर दूसरे दिन उससे कहा—"महाशय, आप सचमुच अपने अड़ोस-पड़ोसवालों का उपकार करते हैं। आप रात के वक्त जो आवाज करते हैं, उसकी वजह से अड़ोस-पड़ोस के घरों के लिए चोरों का डर नहीं रहता है।"

बस! फिर क्या था, कल्याणसिंह ने रात के वक्त आवाज करना बंद कर दिया।

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ अगस्त १९८० के अंक में प्रकाशित की जायेंगी ।

Subhash G. Shenoy

★

Prabhakar Mahadik

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों ।

★ जून १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा ।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा ।

★ दोनों परिचयोक्तियाँ कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसम न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें : चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

अप्रैल के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो : एक दूसरे के सहारे !

द्वितीय फोटो : बने सर्कस के नज़ारे !!

प्रेषक : एस. बन्देअली, द्वारा. टेलीफोन एक्स्चेंज, यल्लारेड्डी-५०३१२२ निजामाबाद जिला

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी ।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 188, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

स्वयंवर

विवाह के बाद रूपा के हाथ की हल्दी भी न उतरी थी लक्ष्मण के राजकुमार होने का भांडा फूट गया।

रूपा तिलमिला उठी। उस ढोंगी से वह कोई वास्ता नहीं रखेगी।

लक्ष्मण ने एक दूसरा ही ढोंग रचा कि रूपा के ठुकराए जाने के कारण वह हताश होकर शराब पीने लगा है। संकट के बादल और भी घने होने लगे।

शीघ्र ही पता चल जाता है कि जैसा वह दीख रहा है वैसा ही नहीं। वह साहसी युवक है और रूपा उसे प्राण से प्यारी है। उस पर जब मक्खनलाल का आवारा बदमाश बेटा आक्रमण करता है उसकी रक्षा के लिए उसका पति ही आगे आता है।

घटनाचक्र ऐसा चला कि रूपा को निर्भीक कदम उठाने का साहस करना पड़ा। मक्खनलाल के परिवार से अधिकाधिक आक्रांत अपने मायके के वातावरण से निकलकर अपने पति के साथ चला जाना उसे श्रेयस्कर लगा।

लक्ष्मण उसे अपनी मामूली सी मढ़ैया में ले आता है। उसे लगा कि उसका पति मिस्त्री का काम करता है। उसके जीवन में अब बीते दिनों का ऐश-आराम कहाँ? पर इस परिवर्तन से उसके भीतर छिपी विशेषताएँ और प्रसुप्त सद्‌गुण प्रकट होने लगे। सब से अधिक उसे इस बात का अनुभव हुआ कि प्रेम के निश्छल आदान-प्रदान का सुख अनिर्वचनीय है।

दुर्गादेवी का घर मक्खनलाल, उसकी दुष्टा पत्नी और बेटे की गिरफ़्त में आ गया। वहाँ अब नरक का वास था। दुर्गादेवी को जब उन दुष्टों की नीचता का पता चला तब बहुत देर हो चुकी थी। उसे लगा कि वे उसकी पूरी संपत्ति हड़पे बिना वहाँ से निकलनेवाले नहीं हैं।

उसमें हिम्मत तो थी कि वह उन्हें मना कर दे, पर अब उसे लगा कि वे उसे मार डालेंगे। उसके पास अपनी रक्षा का कोई भी साधन नहीं था।

मना करने का परिणाम उसके सामने था—उसके कमरे में आग लगा दी गयी। अब शायद वह उसी में भस्म हो जाये। उसकी पुकार सुननेवाला कोई भी नहीं था।

क्या उसकी रक्षा हो सकेगी? इस क्षण क्या राम और लक्ष्मण कोई भूमिका निभाते हैं?

आगे का लोकहर्षक दृश्य पर्दे पर देखिए।

बी. नागी रेड्डी की नई पारिवारिक फिल्म

बी. नागी रेड्डी की नई पारिवारिक फिल्म

स्वयंवर

दिग्दर्शन: पी. सांबशिव राव   संवाद: राज बलदेव राज   गीत: गुलज़ार   संगीत: राजेश रोशन

एक पारिवारिक फिल्म आपके परिवार के लिए-

राम और श्याम

भगोड़े से भिड़न्त

रसीली
प्यारी
मज़ेदार

पॉपिन्स

फलों की स्वादवाली गोलियां

PARLE POPPINS

५ फलों के स्वाद—
रासबेरी, अनानास, नींबू, नारंगी व मोसंबी.

everest/79/PP/262-hn.